A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 255 Subject Indian Philosophy (Nyaya)

Name of MSS सिद्धान्तबिन्दुटीका

Author Madhusudana Saraswata

Period N.A Folios

Script Devanagiri Source Prithi Pal Singh

Missing Folios

14

सिध्दान्तबिन्दु टीका
असं० पत्रक ॥ ल० म० १२ पं० प्र० पृ०

ह० ल०

००

पंचीकृत भूत अपंचीकृतों विषैलय होवै इसका नाम ऐसें नैरद्दिन प्रलय है और स्थूल
भोगादिक विषै जो कहा है ऐसें नैरद्दिन प्रलय विषै अपलो कनाश होते हैं और चार शेष रहते हैं
इनका पै भाव है जीव के जाग्रतावस्था के अभाव तैं स्वप्नावस्था तैं तहां स्थूल के तैरो भाव सें
नै है त्यां स्थूल अभिमान के अभाव सें तें हं लिंग शरीर शेष रहता है जैसें तैसें तहां हू अपलो
कनाश सें तें हूं चार लोक स्थाई जो रलै भ स्थानी हैं सो शेष रहते हैं जे कोई कहे पंचीकृत
के लय सें तें और चतुर्दश लोक के पंचीकृत त्वतें चार शेष कैसे रहते हैं तहां कहते हैं जैसें स्थू
ल अभिमान के अभाव सें तें हूं तत्र तत्र सूक्ष्म शेष रहता है तहां कोई कहे जो जीव का स्थूल त
नाश नहीं होता अपलो कतु नाश होजाते हैं इन दोनों की साम्यता कैसे है तहां कहते हैं
जीव का स्थूल अभिमान मात्र है सो तिस का नाश होता है तहां प्रत्यक्ष स्थूल का नाश
होता का है तें जो वह जीव कर्म संस्कार प्रापई ईश्वर के रचे तहै नातें नहीं रचे सो ध
॥ और अपंचीकृत लब ईश्वर उपाधि अव्याकृत विषैलय होवै तब अव्याकृत प्रलय है॥ अव्या
कृत की लय तुनहीं अनादित्वतें॥ आत्मज्ञान तें जो कार्य कारण का उच्छेद है सो आत्यंतिक है

॥मथा भने तं गलहांपिटिन रखीर के केशरखो हुन
वहरब सांईयां लधा विच मांईयां हयहयउउ करेयन

~~१~~ १६

वा रिंकिकार ककें कल्पित आभास वाद
१ अज्ञानोपहित आत्मा अज्ञान कके
तादात्म्य कूं प्राप्त हुआ चिदाभास के
अविवेक तें अंतर्यामी साक्षी जगत्कारण है
ईश्वर अरु साक्षी कहे हैं
१ बुध्युपहित आत्मा तादात्म्य कूं प्राप्त हुवे चिदा
भास के अविवेक तें जीव कर्त्ता भोक्ता परमा
त्मा ऐसे कहीयत है देहदेह प्रति बुधीयों के
भेद तें नाना चिदाभासो के भेद तें रु तें नानातें
आभेभ चैतन्य हूं भिन्न वत् प्रतीत होता है
अज्ञान के तु सर्वत्र अभेभ तें नाना चिदा
भास के भेदाभाव तें रु विविक्त साक्षी चै
तन्य के न कदाचित भेद भान है इस पक्ष वि
वे न जहदजहल्लक्षणा ही है साभासो के उपाधि वा
च्यार्थ के त्यागतें अरु आभास के हूं जडाजड के
विलक्षणत्व ककें अनिर्वचनीयत्व तें १

अथवा आभास रविवेक चैतन्य हूं तें त्वमस्यादपद वाच्य है तहांया चा
के एक देशभोग त्यागतें इसप्रकार विशेष जहदाजहल्लक्षणा है इति॥

१ रवेर्वग्ताकार मत प्रतिबिंबवाद
१ अज्ञानोपहित बिंब चैतन्य ईश्वर है
१ अंतःकरण तत्संस्कारावछिन्न अज्ञा
न प्रतिबिंब चैतन्य जीव है
१ अज्ञानानुपहित चैतन्य शुद्ध है

१ संक्षेप शारीरक मत प्रतिबिंबवाद
१ अज्ञान प्रतिबिंब चैतन्य ईश्व
र है १ बुद्धि प्रतिबिंब चैतन्य
जीव है १ अज्ञानोपहित बिंब
चैतन्य शुद्ध है इस पक्ष में
विषे जीव ब्रह्मात्व बुद्धि मेदतें है
प्रतिबिंब के रूप परमार्थिक त्वतें
तत्वमस्यादि पदों विषे जहदा
जहल्लक्षणा ही है

१ वाचस्पतिमिश्र अवछेदवाद है
१ अज्ञान विषयीभूत चैतन्य ईश्वर है
१ अज्ञानाश्रयीभूत चैतन्य जीव है
इनपक्षविषे अज्ञान के नानात्वतें जी
व नानात्व है च पुनः जीव जीव प्रति प्रपं
च का भेद है जीव के ही अपने अज्ञान
की उपहितता करके जगत प्रति उपादा
नत्वतें प्रतिभिज्ञान के सादृश्यपनें ईश्व
र के च पुनः कारणत्व प्रपंच जीव अवि
द्याधिष्ठानत्व करके उपचारतें है

१ एक जीववाद मुख्य वेदांतसिद्धांत
रहि च पुनः दृष्टिसृष्टिवाद है
१ अज्ञानोपहित बिंब चैतन्य ईश्वर है
१ अज्ञानप्रतिबिंबित चैतन्य जीव है
१ अथवा अज्ञानानुपहित शुद्ध चैतन्य
ईश्वर है १ अज्ञानोपहित जीव है
इनपक्षविषे जीव ही स्वाज्ञान के वशतें
जगत का उपादान निमित्त है पुनः दृश्य
सर्व प्रातीतिक है देहों के भेदतें जीव भेद
भ्रांत है एक ही जीव के पुनः आपकर के
कल्पित गुरु शास्त्रों करके बंध मोक्ष
व्यवस्था दिकों के दार्ष्टांत आत्मसाक्षा
त्कार से मोक्ष है शुकादिकों के मोक्ष
अर्थवाद है महावाक्यों विषे तत्पद अ
नसत्यपद अज्ञानानुपहित चैतन्य के
लक्षणा का उपदेश व्यापकत्वादि अर्थों का
भेद कहा है

डा

255

सिद्धान्तबिन्दु

Od

ਨਾਮਸਮਸ੍ਟ੍ਯਾਂਲੇਖੋ ੮

ਸਲੋ੧ ਜਾਤ੨ ਦੀਸਨ੩

ਚੌਰ੪ ਪੁਰਖ੫

आपका कैसे सो शिष्यों
वा शिष्यों द्वारा के के

श्रीरामायनमः श्रीशंकराचार्यका नवश्रवतार है रवेयस्थ का गु
रु है ऐसे रवेपवे ष्वर गुरु कूं नमस्कार कर कैं वेदांतशास्त्रके
श्रवणतें रवेषे आलसीयोंके बोधतांई करताहो के शुएक प्रयत्न
कूं १ई हांतिषय यकवें सो शुद्ध च पुनः परंपरा कर कैं संकल्पोंजी
वोंकूं भलाप्रकार उधार कीयाचहते हो ये भगवान्श्रीशंकर
अनात्मातें भिन्न आत्मा नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभावकूं संक्षेपक
कैं प्रकाश करबेकूं दशश्लोकीकूं रचत भये॥ नचेदंकारास्पदें
तें विवेक कर कैं अहंकारास्पद आत्मा कूं अहमस्मी इति निश्चयक
रहि च पुनः दुःख कूं अनुभव कर्ता हे इस हेतु कर कैं ज्ञात ज्ञाप
क तें च पुनः स्वतः प्रयोजनत्व तें आत्मतत्त्व प्रति पासने व्यर्थ है इतेचे
मे चैतन्य कर कैं भास्य लहरा कर कैं इदमाकारास्पदों के देहेंद्रि
य प्राण मनों कूं प्रति भासता अहंकारास्पदत्व कर कै तहां इतेन के
अविवेक तें च पुनः इतेन कर कैं पुरुष हूं आत्मा दुःखित्वादि धर्म मानते

अहं दुःखी इत्यादि ५ ... अहं दुःखी

सर्वलोक
जो नाव...
ज्ञात ज्ञापक
त्व सें ते हैं दुः
रव के न ह ... हा
व न तें ऐसें प्रमो
सें ते जो न कें ...
भाव तें

सुखप्राप्ति२ दुःखाभाव२

शास्त्रकर्कैंहीं ब्रह्मात्मैकत्वज्ञानककैं समूलरूतेस भ्रमकोरनेवृ
त्तेतें रेतेसातेंअज्ञातज्ञापकत्वतें चपुनः संपूर्योजनत्वतें आत्मत
त्वकाजोप्रतिपादनहै सोनहीं व्यर्थ चपुनः रेतेस आत्मतत्वको
तेत्वमस्यहंब्रह्मास्मीत्यादिवेदांतमहावाक्यहीं प्रमापकहै च
पुनः सोवाक्यतत्वंपदार्थज्ञानद्वारकर्कैंबोधकहीहै रेते अरत
त्वंपदार्थप्रकृतवाक्यार्थानुकूलें औरप्रकार असेंहत्वतें ते
दोनोहं शास्त्रकर्कैंहीप्रमातव्यहै यूपाहवनीयादिपदार्थजैसे
रेतेसीतैचपुनः यतोवाइमानिभूतानिजायंतेइत्यादिसृष्ट्यादि
श्रुतीतत्पदवाच्यार्थकेसमर्थकहैं तुपुनः सत्यंज्ञानमनंतंइ
त्यादिलक्षके इसप्रकारसोकहाहै महामत्स्यउभयकूलेसं
चरति॥ परंचापरंचयइत्याद्याजाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिश्रुतीत्वं
पदवाच्यार्थकेसमर्थकहैं क्यासिद्धकरतीहैं योयंखेज्ञान
मयःप्राणेषुहृद्यंतर्ज्योतिःपुरुषः नहि ऐइसारंपन्नपेद

कापूर्वोक्तिअन्वय
कूं चेहत्तेहै ८ केर खेबे

न्यादेयः त्वंपरके लहका॥ रतेसहेतुककैंपरहेलेंअवांतरवाक्यों
ककैंअनुभूतसुहजीवअखलतत्वमस्यादिवाक्यसुखा
र्थककैंअन्वयकीअनुपपत्तेतेचपुनेलहणाककैंस्मरणके
उपपत्तेतें सपुपूखेषेनेर्विकल्पकसाहीचैतन्यकेअनुभव
अंगीकारतेंचपुनः अद्वितीयब्रह्मकूंजनावताकीइर्षेप्रवृत्त ककैं ५
सत्यज्ञानादिपदों ककैंउपाधिवर्जित चैतन्यप्राप्सतेहै' खेबे६
चैतन्यमात्रखेषेतात्पर्यककैंतहांहीचैतन्योंग्रारखेषेसंस्का
रउद्बोधतेंचपुनः चेहत्तेहैं जिन्याकाग्रादिपदोंतेंहू रनेर्विकल्प सीतें
कतात्पर्याधीनत्वतेंग्रापप्रवृत्ततें इनककैंप्रमेयतेप्रमाणभानम इहांपूर्वोक्ति
हावाक्यार्थबोधखेषे निरस्तहै असंप्रज्ञातसमाधिकेपुर्तेस्मृ येस्मरणपरे
तिककैंसिद्धत्वतेंपुनः इति परोहसरद्वितीयत्वोंककैंचपुनःनत आत्मतत्वप्रती
त्वंपदार्थमात्रअनुभवतेंहीकृतकृत्यताहै वाच्यार्थकेभेदाव पारनेंनव्यर्थं
भासतेंनपोनरुक्तहै लक्ष्यार्थकेचपुनःएकत्वतेंअखंडार्थताहै [illegible]

२

"एक पद के तैसे साक्षात् वाक्य के ... " = केवल वाक्य विषे ल- क्षणा नहीं किंतु पद ... उपपत्ति २ " क्या सविकल्प वाक्य का सविक- ल्पक अंतरंग है

पदस्तत्त्व ... च पुनः स्मरण के करने र्विकल्पक वाक्यानुकूल करने र्विक- २
ल्पकत्व जो है सो अनुभवतें ही अवरुद्ध है सविकल्पक वाक्यार्थ
बोध विषे च पुनः सविकल्पक पदार्थ स्मृति अंतरंग है प्रसंग वे
बे च पुनः निर्विकल्पक जो बोध है तैसे ही के प्रमात्व के कैसे अ-
ज्ञान निवृत्ति सामर्थ्यतें इसीतें नहीं लक्षणा तु वक्ष्यमाणक तें भिन्न लक्ष-
णा के अनुपपत्ति प्रकृत वाक्यार्थानुकूल पदार्थोपस्थिति नहीं
हुँ केवल लक्षणा के साध्यत्व तें ननु तब वेदांत वाक्यों तें ही पदार्थो-
पस्थिति वाक्यार्थ बोध होते च पुनः तैसे ही के स्वतः ही प्रामाण्य
तें अर तिन कर अज्ञान अर तत्कार्य निवृत्ति उपपत्ति से तो क्या
है विचार कर कैं इति चेत् सत्यं वेदांतों के यद्यपि स्वतः प्रामाण्य
तें निर्विकल्पक आत्मा के साक्षात्कार कूं उत्पत्ति कर्ता है तो भी
मंद बुद्धि वादी के विरोध कर उत्पत्ति संशय युक्त बंधक कैं अ-
ज्ञान नाशकत्व के असामर्थ्यतें विचार कर्तव्य पुनः संशय की

कल्पक का ... सविकल्पक ... इस विकल्पक वाक्य का अंत- रंग साधन है २ जो यों

ककै २

निवृत्तिर्विशेषनिरूपवाद अज्ञानादिकीनिवृत्तिहेइतिसंज्ञायवी
जमूततवादीयोंकेविरोधनिराकरणार्थविचार आरंभकरी
यतेहै तहांप्रथमत्वंपदार्थविशेषविरोधकूंदिखावतेहैं तत्प
दार्थकेज्ञानतात्पर्यविषयताकरकैंपूज्यत्वसंतेहैं त्वंपदा
र्थकिज्ञानजन्यमोक्षफलभोगिताकरकैंसेवतेहैं पूज्यतत्व
में तहांदेहाकारपरिणत चत्वारिभूतही त्वंपदार्थहैइतिचार्वा
काः औरचक्षुरादिएकएकत्वंपदार्थहैऐसेकहतेहैं रमैस्येह
येकूंऔरएकमनकूंऔरप्राणकूं हणाकरविज्ञानकूंसोगत
शून्यकूंमाध्यमिक देहोंडयोंतेभिन्नदेहपरिमाणदिगंबर क
र्त्ताभोक्ताजडविभुइतिवैशेषकनार्किकप्रभाकर जडबोधा
त्मकभट्ट भोक्ताहीकेवलबोधात्मकइतिसांख्यपुनःपाते
जल आरविद्याकरकैंकर्तृत्वादिभोक्तापरमार्थतेनिर्धर्मकप

२3

रमानंदबोधहीं इत्यौपनिषदाः इसप्रकारसैंमान्यतें अहंप्रत्यय
कीसिद्धकरीयेवे चिदात्मा विषेवादरवेरोधीकवैसंदिग्धअहंप्रत्यय
के आश्रयकूं खंडनीयकवैकहतेहैं भगवान् आचार्य नभूमि
र्नतोयंनतेजोनवायुर्नखंनेंद्रियंवानतेषांसमूहः अनैकांतिक
त्वात् सुषुप्त्यैकसिद्धस्तदेकोवशिष्टः शिवः केवलोहं १ अस्या
र्थः अहं अहंप्रत्ययका आश्रयहै एको अद्वितीयहै अवशिष्टः
क्यासर्वदैतबाधसेतें अबाधितहै शिवः क्यापरमानंदबोधरूप
रतेसहीकेमंडलरूपत्वतें केवलः क्यासेधर्मकः रतेसहेतुकवै
अद्वितीयसर्वप्रमाणान्अबाध्यपरमानंदबोधहीं अहंप्रत्यय
काआश्रयहै ये अपनेषट्पदहींप्रेयहै इत्यर्थः इसकेसेंह
तांई औरवादीयोंकेमतोंकूं खंडनेराकरणाकर्त्तोहोया परहेलेंदे
हात्मवादकूं खंडनेराकरणाकरतेहैं नभूमिर्नतोयंनतेजोनवायुर्न

रनिर्धर्मक ८

क्या भूम्यादिकों विषे अवयवी कोईरी एक नहीं मानते ह

खरमेत्ते ईहां अहंऐसे सर्वत्र एक एक पूरतेन आ क्या नहीं ऐसे
संबंध कूं पावता है क्या जो पृथिवी है सो मैं नहीं होवों जो मैं होंसो
पृथिवी नहीं होवे है वा इत्ते परस्पर तादात्म्याभाव स्वबेयो
ग्य है यद्यपि वादी जो हैं सो भूम्यादि एकाएक पूरते आत्मतत्त्वकूं
नहीं अंगीकार करत्ते संघातके हीसो अंगीकारत्तें तोऊं रत्ते नहीं
के मत्त विषे अवयवीके अनंगीकारत्तें चपुन पंचमतत्त्वके अ
नंगीकार अंसंगकके संयोगादिसंबंधके अनंगीकारत्ते च
पुनः संहत्तीके अभावत्तें संघातकी असिद्ध है ऐसे आरंभेप्रा
यकूं कके तिरु एकभूतप्रतें निराकरणकूं कके भूतेक देहात्मवादी
को निराकरण है यद्यपि भूत चतुष्टय तत्त्ववादी यो केमत विषे आ
वरणाभावत्व ककें आरंभे मत अस्थिर असत् आकाआकाहै प्र
रत्ते अनुपादानत्व है तथापि ऐसे ह्रांत विषे रत्ते सके भावत्व ककें

पि अभावक भीतादि आवरण संते अस्थिर हो जाता है असा हो जाता है

2

देहोपादानत्व अंगीकारतें तहांहीं आत्मत्व प्रसक्तोंके सो खनेरा
कृत है अथवा नवायुरित्यं तहीं देहात्मवादका खनेरा करता है
नेत्रखरमेरते अन्यवादका खग्राहके प्युन्यवाचकत्वतें नेंद्रिय
रमेरते एकेकेंद्रियके आत्मत्व खनेरास है ननेषांसमूह ऐसे मि
लतेंभूतोंदेहावयवप्राकारके कैपरखेगातोंइंद्रोंकेचपुनःरमे
लतें का खनेरास है पूर्व संघातअनंगीकारकके एकुएक भूत
का खनेराकरता है अब नु संघात कूं अंगीकारकके हूं खनेरा
करता है येमेरहें भूतोंके खनेराकरताकेकैंभौरतेक प्राण
मनहूं खनेरास है चपुनःमनके खनेरासकरताकके मनो
वृत्तिहरणे कारवेसान कादेहातेरिणाकर्तृत्वभोक्तृत्वादिवि
रग्रोहका चपुनः खनेरास है रसेदांतरवेष ज्ञानेछा सुखदुःखा
दिकोंका अंतःकरता प्रयत्व अंगीकारतें कामसंकल्पादी

कँ।हे के

नवँ कृत्स्न एतत्सर्वं मन एवेतेष्वृते:। एतेन कर्कैं देहात्मवादकूं ले
कर्कैं केवल भोक्तृ पर्यंत जो तत्वाद्यां भी कारकरत्यों के अनात्म
त्वप्रतिज्ञा तहोता है तहां हेतु है अनैकांतकत्वादेति द्यपरभेचा
रित्वात् एवनाभूत्वात् इतते यावत् आत्मा के देशकाल अपरछे
भेत्वतें एतेस देशकाल परछेदों के घटादिवत् अनात्मत्वतें ते
स आत्मा के ध्वंस अरु प्रागभावों के चपुनः ग्रहण करवे कूं अ
नाकपत्वतें अनात्मावूं के जडत्वतें चपुनः आपतें एमेन आत्म
त्व के अभावतें आत्मा के एकत्व संतेहं सुखदुःखादि प्रत्य
यतः करणों के भेद प्राप्तें व्यवस्था कायुक्ततें आपही कर्कै
आपके अभावग्रहण विषे विरोधतें ग्राह्यकाल विषे ग्राहक
के असत्वतें ग्राहक के सत्व विषे ग्राह्य के अभावतें कृतहान्यकृ
ताभ्यागम प्रसंगतें चपुनः नतेस के ध्वंस अरु प्रागभाव हैं।

५
5
चपुनः सद्रूप आत्मा के सर्वत्र प्राप्ति तें नहीं अत्यंताभाव बनता
है तन केरमे थ्यात्व कहै तत्र शत्मा की प्राप्ति कहै ऐसे हृत्वतें पुरुस्कि
भा स्नातारिवत् अध्यस्तत्व कहै तत्र शत्मा भाव नहीं ऐसे ह होता॥
ऐसे न कहै आत्मा नहीं अभाव का प्रतियोगी अभाव प्रति
योगी चपुनः देहें इंद्रियादिक है तैसे हेतुक कहै ये नहीं आत्मा के
तु स्वप्रकाश बोधरूप है नाम जैसे सकार तैसे ऐसे स्वप्रकाशात्मा
विषे अनिर्वचनीयानाद्य विद्या कहै कल्पित अनिर्वचनी
यहीं है इतितें ऐसे धोतर रहस्यं ननु बोधरूप आत्मा ऐसे तुज के
अंगीकार तें चपुनः सुषुप्ति विषे बोध के अभावतें बडा मूढ मै
होत भया न कछु एक मै जानत भया ऐसे सुषुप्ति तें उत्थित के
विचारतें कैसे अव्यभिचारता है तैसे कहे ऐसे आशंका कहै
कहता है सुषुप्ते कस्सिदह इति अर्थ ये आत्मा के सुषुप्ति विषे

वेसाक्षित्वतें नतौसकानहींअभावहै अन्यथामैमूढहोत
भयाऔरसविचारकेनहोवणातें मातृमानमेयोंकेव्यभिचा
रसैंतेहूं तौसकेभावाभावकेसाक्षीकैकालत्रयविषैहूं
अव्यभिचारतें ननुप्रमाप्रत्ययप्रमाताहैसोईहौंचपुनःक
र्त्ताभोक्ताहैदीपकवत्स्वपरकासाधारण सर्वभासक
हैचपुनःनघटादिवत्साक्षीसापेक्षहैइतिचेन्न सविकारि
त्वकर्तृस्वविकारसाक्षित्वकेनहोवणातें दृश्यरूपकेद्रष्टत्व
केअभावतें प्रमाताकेपरिणामित्वकर्तृदृश्यरूपत्वतें एकहीकू
टस्थकेसर्वसाक्षित्वतें एककूटस्थनेधर्मकनहींआरर
कूंपावताअप्रमाणलौकिकत्वतेंइतिचेन्न तमेवभांतमनुभाति
सर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभातितेनदृष्टेर्द्रष्टारंपश्येते
अदृष्टोद्रष्टानान्यतोस्तिद्रष्टाइत्यादिबोलतैवेदांतप्रमा
द्रष्टाअदृष्टहै

ताराजककैं इतेंसहां के सर्वसाक्षी है त्वंकवैं अभिन्नोक्तत्वतें
ननु बडा ये इंद्रजाल है प्रमा आश्चर्य हैं ऐसे अकूटस्थ कूं
त्यागकैं नहीं प्रमाश्चर्य नहीं ऐसे कूटस्थ कूं प्रमाता राज
जो है सो सर्वसाक्षीकर्त्ता है इतें अंगीकार है तातें तूं इंद्रजाल
हीं है स्वप्न जैसे अविद्या के खेल सत्वतें तो भी है रूप के घटा
दिवत् जडत्वक कैं कैसे प्रमाश्चर्यत्व है इतें चेत् दर्पणगादिव
तस्य कृत्वककैं स्वरूपबिंबग्राहकत्वतें अथवा चैतन्यतादात्म्या
ध्यासतें ननु नीरूप निरावयव आत्मा का कैसे प्रतिबिंब है
इतें चेत् नहीं कोई इहां अयुक्त एवं भ्रम हेतूं के रचे चेत्रत्वतें
जपाकुसुम रूप के नीरूप निरावयव के स्फटिकादिकों विषे
प्रतिबिंब के दर्शनतें शाब्द के हू प्रतिव्याप्तव्य प्रतिबिंब के उपलं
भतें तिन्हों की प्राप्त प्रतिबिंब वेल हरा प के अनेरूपराता॥

जो भ्रम के अधिष्ठान हैं
ते आश्चर्यरूप होते हैं

जानूमात्र हूं उदक अति गंभीर ~~[illegible]~~
प्रतीत आकाश के प्रतिबिंब तें है ३

तथा विहइंद्रियग्राह्य के प्रतिबिंब है इसतें चेतन व्यभिचार तें अ
तींद्रियग्राह्य गु साक्षी प्रत्यक्ष के हूं आकाश के जलादिकों विषे
प्रतिबिंब के उपलंभ तें अन्यथा जानूमात्र हूं उदक विषे अति
गंभीरता प्रतीत न होवे तैं बन्ध्रध के जल विषे प्रतिबिंब प्रतीत
का हेतु तें नहीं उपजेती आकाश प्रतिबिंब के साहश्य के कैं भा
स्यत्व संतें हूं अधिष्ठान सहशगर्थ चह्नों की अपेक्षा तें इसकर्के
नीला है नभ इत्यादि भ्रम विषे हूं चह्नों के अच्चरणपतेर के कूं
कहा है तहां पूर्व का श्राकाश आकाश के अधिष्ठानत्व तें इसे सीतें चा
हुषु प्रतिबिंब हीं रूप सापेक्ष है तहीं और ऐसे धारो तथा रविन्ना
त्मा के प्रतिबिंब विषे कोन मान है इसतें चेतन सुराग रूपं रूपं प्रति
रूपो बभूव तदस्य रूपं प्रति चक्षणाय एकधा बहुधा चैव दृ
श्यते जलचंद्रवत् मायाभासेन जीवेशौ करोति इत्यादि श्रु
तेः स एष इह प्रविष्टः स एतामेव सीमानं विदार्यैतया द्वारा
होतभया

नविज्ञेष है नील पृष्ठ अरदस्य मंगुस्ता सो आत्मा औसे नही
रकारसत्वते अपवाद रमगुआअरजतद्व यो गृहे १०
तिनकू वीखेप्रवेशाकर्तमया १

प्रपद्य तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत् इत्यादि प्रवेशश्रुत्यन्यथा
नहीं सिद्ध होवे है आभास एव च अत एव चोपमा सूर्यका
दिवदित्यादि पारमर्ष सूत्र च पुनः मान है तिस प्रतिबिंबके
सतत्व है औसे प्रतिबिंबवादी कहे है रमिथ्यात्व ही है औसे आ
भासवादी स्वरूप विषे तु नहीं विचार इत्यन्यदेतत् अचेत
न खेलहरा त्वतु प्रवृत्ते च पुनः प्रत्यक्ष सिद्ध है रतैसी तैं सिद्ध
के है अतः करणाँ प्रतिबिंबाध्यास द्वारा प्रमातृत्व ननु अध्या
सहूं नहीं सिद्ध होता तैसे कहते है आत्मा विषे अनात्मा अध्यास
करणा है तिया अनात्मा विषे आत्मा वा अध्यासः तिस आत्माके न
त्वे सौमान्यक कैं नरविशेषकें सर्वदा भासमानत्वकें स्वादृक्लि
त्वे त्व रहितकें च पुनः अधिष्ठानत्वके असंभव तें न हं इसर है
तिस अनात्माके रमिथ्यात्व अभ्युपगम तें रमिथ्यावस्तुके अ
धिष्ठानत्व विषे प्रत्यवारके प्रसंगतें च पुनः तिसके सतत्व

संतेतिस्वके अनिवृत्तककैं अनिर्मोक्षप्रसंगात्ते च पुनः एके
सीतें स्वत्वकाकहूं नहीं अनिवृत्त अनिवृत्तमानकूं च पुनः ज्ञान
ककैं अनुभवकर्रायत है तहां श्रुतिहैं च पुनः एमेवतेहद
यमंधेः रुद्धे ते सर्वसंग्रायाः क्षीयंते चास्य कर्माणि तस्मि
न्दृष्टे परावरे तमेवं विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पंथाः विद्य
तेयनाय तरति शोकमात्मविदित्याद्याः ज्ञानात्सर्वसंसा
रनिवृत्तिं दर्शयित्वाः तस्य मिथ्यात्वं सूचयंति एकमेवाद्वि =
तीयं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन अथात आदेशो — औरहै वादेत
नेति नेति इत्याद्याः श्रुतयः साक्षाद्वैवरमिथ्यात्वं प्रतिपा
दयंति दृश्यत्वेन प्रतीतेः रजतवत् मिथ्यात्वानुमानाच्च॥ — तेसैं ं संते
आत्माकैं अध्यस्तककैंही अनात्माकासिद्ध है तहां आत्मा
अध्यास है च पुनः अनात्माके अध्यासककैं आत्माके साद
रूपार्‌हितोवके संभवत्ते तहां अनात्माध्यास है इत्यात्मा

ईसककें आत्माश्रय
दोषकूंजनायो २

= इसककें अन्यो
न्याश्रयार्‌हितै
वकूंजनायो १

८
8

कया। अविद्यकत्वतें इतरकीया ऐसे

अन्यायानुत्तम दोषप्रसंगतें चपुनः इसकरिकै आत्मानात्मा
ध्यासके अविद्यकत्वतें नहीं विकल्पका अवसर है इतरकी
या स्वपुका आत्मा विषे अविद्या कीहु अनुपपन्न है तैसेक
हे हैं सो हु अध्यस्त है अनध्यस्त है वा तहां आदि विषे कैसे न
आत्माध्यया रहि कैसी एक दोषतम का प्रसंग है अरु अंतवे
षेकया अनाध्यस्तसंतें अनुक्ते इतें अरनेमोक्ष प्रसंग है चपुनः
सर्वके अध्यासमूलत्वसंतें भ्रमप्रमादि व्यवस्था न होवै॥
एकही आत्माके चपुनः प्रमाण प्रमेय प्रमिति प्रमातृ रूपता
विरुद्ध है चपुनः अविरोध प्राप्तसंतें सौगतमतका प्राप्त हो
ती है इसतें इहां कहीयत है अहंमनुष्यः कर्त्ता भोक्ता इत्यादि
तावत् सर्वजनके प्रसिद्ध है सो नहीं चपुनः स्मृत्न अपरोक्षा
वभासत्वतें भेदाग्रहणपूर्वकत्वतें चपुनः नहीं ये प्रमा प्र
तीयुक्त बाधितत्वतें तैसे चपुनः श्रुति है योयं विज्ञानमयः

हूरहैं पापजेसतें

प्राले बुहस्यंत ज्योतिः पुरुषः अयमात्मा ... सत्यं ज्ञानमनं
तं ब्रह्म खिज्ञानमानंदंब्रह्म यत्रात्मा अपहतपाप्मा यत्सा
क्षादपरोक्षाद्ब्रह्म योयमात्मा सर्वांतरः योऽशनायापिपासे
शोकं मोहं जरां मृत्युमत्येति स्वयं तं नरके चित्यनुपपत्तेनचा
गतस्तेन भवत्यसंगो ह्ययं पुरुष इत्याद्याः अकर्तृ अभोक्त
परमानंदब्रह्मरूपता आत्माकूंदिखावैहैं युक्तं च पुनः
हैं विकारीयोंके परिणामसतें परिच्छिन्नत्वक कैं अनात्मत्वके आ
पनतें आपककैं आपके ग्रहणविषेकर्तृकर्मविरोधतें दृग्दृश्य
संबंधके अनुपपत्तेंते भेदककैं अभेदककैं बाध मैं धर्मीभाव
कीं अनुपपत्तेंते च पुनः ज्ञानके अरनेत्यत्वप्रस्रविषे रतेससा
नके व्यक्तभेदध्वंसप्रागभावसमवायज्ञानत्वजात्यादिके
अभ्युपगमविषे गौरवतें च पुनः एकत्व अभ्युपगमविषे लाघ

वाक्तभेदसंबंधसप्रागभाव
के कारणत्वतें ज्ञानत्व संबंधा
त्मा ... पावे ...

नहींअन्यथाकी
वाप्नजेसके

कौं ... (margin notes, illegible)

जे ज्ञानके उपाधिसें बंधतें ज्ञानत्व वास्तव होवे तव आकाशादिकों के हूं उपाधिसंबंधतें भेद वास्तव

जो कहे घटादिकों के हूं भेद इत्व होवे सो न ही भेदप्रतीत बंधके ग्रहण

ऐतें लाघवतें घटज्ञान पटज्ञान ऐसें उपाधिभेद के पुरस्कार करकै ही ज्ञानभेदके प्रतीततें स्वतः तु पुनः ज्ञानज्ञान नहीं है ऐसें एक रूपके अवगमतें च पुनः तिसके उत्पत्तिरहितपणेकी प्रतीत ... अवरूपकल्पकविषयकी संबंधविषयताकरकै ही रसि ... तें ॥ ननु उपाधि ... के ग्रहणकरकै स्वतः ही घटांतरतें घटांतरके भेदप्रतीततें तत्प्रतीतिबंधके ग्राहकके असंभवतें च पुनः आकाशादिकालादिगुणादिके हूं नानात्वापत्तितें कर्तृत्वादिके वास्तवत्वविषे आनेमोक्षप्रसंगतें च पुनः स्वप्रकाशताकी अप्राप्तिविषे जनके आंध्यप्रसंगतें च पुनः परमप्रेमास्पदत्व करकै तिसके आनंदरूपत्वतें ऐते धर्मकरके नित्यस्वप्रकाशसुखात्मक ही है आत्मा इत्यादि यः तिसीतें परिशेषतें ये आते है ऐसें तिसकी स्थितिविषे तत्कारणहूं कोई एक कल्पनाकर

ऐसें गोरी करकरके अधा तिसज्ञानके ।
सासंभव पुरुषकूं हरक के
अबतत्कारण अविद्याके
असंभवकूं हूं हरकारते है ।

= नैयायिक कहताहै ज्ञानके अभाव
कानाम अज्ञानहै सोहम नहीं ज्ञानके नित्यत्व
तें ३ ·

= धर्मी कहीये ज्ञान अरु प्रतियोगी
कहीये अज्ञान तिन दोनोंके साम को
लोपनोनेकरी

बेयोग्यहै चपुनः सो कल्प्यमान धर्मी आत्माविषे अध्यस्तक
कैं हौनताहंकमानककैं रसिद्ध होताहै इते नजानामि ऐसे साक्षी
प्रतीतिसिद्धहै एह अज्ञान अनिर्वाच्यहै नैं चपुनः ये भावरू अं
पहै ज्ञानकेनित्यत्वककैं रतेसके अभावकी अनुपपत्तिकेउ
रुत्वतें धर्मीप्रतियोगीज्ञानोंज्ञानोंककैं चपुनः व्याघाततें = सो अज्ञान
॥नहूं भ्रमसंप्रदाय अरतत्संस्कारपरंपरारूपहै अपरोक्ष
त्वतें अतीतानागत भ्रमसंप्रदायतत्संस्कारोंके चपुनः परो
क्षत्वककैं जानबेकूं अज्ञापकत्वतें आवरणात्मकत्वतें चपुनः
भ्रमोपादानत्वतें आत्माकेरनेरविकारत्वतें चपुनः अंतःक
रणादिकोंकेन जन्यत्वतें देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढां इ
अज्ञानें अन्योपी
त्यादिगुणवत्त्वश्रुतेश्च मायांतु प्रकृतिं विद्यात् इ० मायाभिः
उपासाने
पुररूपईयते अनृतेन हि प्रत्यूढाः नीहारेण प्रावृताः भूयश्चा
जीव

= अज्ञानआ
वरणात्मकहै
अर ... के
अज्ञानवा
भ्रमकाकार
णहै तत्संस्का
ररूपहै तत्ता
सुनहूंहै

१०

चैस्वप्रकाशरूपआत्माहीहै ५

तेखेप्रमायानिवृत्तेः इत्यादिप्रश्नुतेतेचपुनः मायाअरखेयावा
च्यअनिर्वाच्यहैअनृतहै तत्वज्ञाननिवर्त्यहै चपुनः स्वपर
अध्यासखेषकारणहीहै सोअज्ञान इसतेचपुनः नहीअ
न्माप्रयादिदोषप्रसंग अनादित्वककैतांत्रेरासतें अना
दित्वककैउत्पत्तिकेअभावतें ईनके स्वप्रकाशआत्माचैतें
स्वरूपत्वतें रतेसहेतुककै अज्ञानाध्यासखेविशिष्ट चैतन्यखे
खे अहंकारकाअध्यासहै चपुनः तिसअहंकारखेविशिष्ट
खेषकामसंकल्पादिकोंअहंकारधर्मीकाचपुनः इंद्रियधर्मी
कापत्वबधिरत्वादिकोंकाअध्यासहै चपुनः इंद्रीकेपरोह
त्वतेंनपरोहधर्मीकाअध्यासहै इतेतेसिधांतः चपुनः तेतेन इंद्रियां
तरखेविशिष्टचैतनखेषस्थूलदेहकोअध्यास धर्मपुरस्कारक
कैहीअहंमनुष्यः इत्याद्याकारहै स्वरूपतेंतुपनः नाहंदेहः ।

अनिर्देश्य
त्वककै

स्रो

अैसे अध्यासतैं स्वपुत्रादिके अभावतैं च पुनः तैसे स्थूलवि
रीष चैतन्यविषे स्थूलादिदेहधर्मोका अध्यास है च पुनः तैसे सावि
षैविषे बाह्यपुत्रभार्यादिकोंके सुखदुःखादि धर्मोका अध्या
स है इसप्रकार चैतन्यका अहंकारादि देहपर्यंतोविषे अध्या
स है संबंधतें च पुनः अध्यासका व्यवधान तारतम्यतैं प्रेमका तारत
म्य है सो कहा है वार्त्तिकअमृतविषे श्लो० वित्तात्पुत्रः प्रियः पुत्रा
त्पिंडः पिंडात्तथेंद्रियं इंद्रियेभ्यः प्रियः प्राणः प्राणादात्मा प
रः प्रिय इति पिंड स्थूलशरीर है प्राण अंतःकरण है देहकी
अपेक्षा करकै च पुनः इंद्रियोंके ही प्रियत्व है शस्त्रवृष्ट्यादिकी
धारापातविषे चक्षुवोंके मीलनदर्शनतें अनुभवसिद्ध है
तिस हेतु करकै अन्योन्याध्यासतें चिदचित्स्वरूप अध्यास
है एक ही के अध्यास अंगीकारविषे अन्यहीं अभानप्रसंगतें
क

अध्यासके स्वरू
रूपका व्यवधान है ता
है तहां अध्यास न तारतम्य हि
सं तें अध्यास खिषे प्रेमका

जैसे रज्जु अरु सर्प दृष्टान्त विषे सर्पपरस्पर रज्जु नाकी रहोते है

॥ अध्यस्त के ही अम रखे षे भान के रने य मतें इमे षु गार जते ऐसे स
मू हाले बन अमवत अवरूप ही इतरे तरा ध्यास है सर्व बाधाव
धि भूत चैतन्य के परि शेषक कैं चि पुनः नप्रवृत्यवाशापत्ते है
अध्यास के सत्यानृत संभेदाभासत्वतें लेसातें पूर्व पूर्वाध्या
स मूलहोंनह उत्तरोत्तरा हंकारादि अध्यास है बीजांकुरवत् ॥
च पुनः अनादि अविद्याध्यास एक हों अनादि है नन्वाध्यास के
अनादित्व कैं स्मृति रूप है और स्थान रखे षे पूर्व दृष्टाव भास
ऐसे कहते भाष्य कारक कैं स्मृति रूपत्वतें संस्कार जन्यत्व उ
के विरोध कुं पावे है नं कार्याध्यास के आरंभे प्रायत्वतें परत्रप
राव भास है ऐसे तावन्मात्र के ही उभयानुगतलक्षणात्वतें यहा
सत्यानृते रमेथुनी कृत्य तै क्वासत्यं अनृत विषे रमेथुनी कृत है अ
ध्यास ऐसे भाष्य कार के वचनतें सत्य रमेथ्या वस्तु का संभेद

परस्पर का अवभास अध्यास है

वभासअध्यासहै ऐसे होंसिधांतलहणाहै इसहेतुकरकैनही
कारणाध्यासविषेहीलहणाकी अव्याप्ती कार्याध्यासकेच
पुनः प्रवाहरूपकरकै बीजांकुरवत् अनादित्वकेकथनतेंनहीं
कोईएकदोष इसप्रकार अध्यासकीसिद्धिविषे एकहीआत्मा
केजीवईश्वरकीव्यवस्थाहै अरशरीरशरीरप्रतिमानमेंया
दिकभेदकरकर्मव्यवस्थाहुंबनेहै पहिलें आभासवादकरकै
दिखावतेहैं तैसेकहेहै अज्ञानोपहितजोआत्माहैसो अज्ञा
नतादात्म्यकूंप्राप्तअपनेचिदाभासकेअविवेकतेंअंतर्या
मीसाक्षीजगत्कारणहै ऐसेकहीयतहै चपुनःबुध्युपहित
आत्मातत्तादात्म्यप्रापन्नअपनेचिदाभासकेअविवेकतेंजी
वहै चपुनःकर्त्ताभोक्ताप्रमाताऐसेकहीयतहै इसिवार्तिकका
रपाद्याः देहदेहप्रतिबुध्यादिकोंकेचपुनः भेदत्वतें नानात्वचिदा

साभास
ब्रह्म शुद्ध अज्ञानवाची यदि होता है पुनः तैसे अहं शब्द अहंवाची का अंश है
१२ वाच्य जिसको सो होता है तिस पक्ष विषे जहत्‌ लक्षणा है
12 भासभेद कहे तिन्हों तें अभिन्न चैतन्य के हूं भिन्न जैसे प्रतीत क
रीयत है नु पुनः अज्ञान के सर्वत्र अभिन्नत्व तें जहत्‌ चिदाभा
स भेद के अभाव तें तैसे तें अभिन्न सा ही चैतन्य के न कहा चे
तहूं भेद भान है इति इन पक्ष विषे तत्त्वमस्यादि पदों विषे जे
अज्ञानांश हल्लक्षणा ही कहे साभास उपाधि वाच्यार्थ कि हानि तें।
आभास के हूं जडाजड उभिलक्षणत्व कहे अनिर्वचनीयत्व
तें सो कहा है संक्षेप शारीरक विषे अर्ध श्लोक कह के साभा
ग्रं १९ सा ज्ञानवाची यदि भवति पुनर्ब्रह्म शब्दस्तथाहं शब्दो हंकार वा
ची भवति च जहल्लक्षणा तत्र पक्षे इति न च पुनः आभास
के ही बंधत्व तें अर केवल चैतन्य के मुक्तत्व तें बंध मोक्ष हैं के वैयधि
के करण्य है अर चिदाभास स्वनाश आर्थ प्रवृत्ति हूं अनुपपन्न है
ऐसे कहते योग्य है केवल चैतन्य के ही आभास द्वारा बंधत्व

केअभ्युपगमतें तदुक्तं वार्त्तिककारपादैः अयमेव हि नोऽनर्थो
यत्संसार्यात्मदर्शनं रमेसत्ते अर्थ ये इस आत्म कें हीं देखें नि रखे
संसारी भाव निश्चय करकें नहीं अनर्थ इसतें इस हेतु करकें प्र
तिचैतन्यके आभास ही बंध है च पुनः तत्त्वे वृत्ति मोक्ष है इसतें न
हीं कछु असमंजस अथवा आभासु रखे रखे क चैतन्य ही त
त्वमस्यादि पदों का वाच्य है रलैन वाच्य के एकदेश के त्यागतें
मोक्ष है इस ही पक्ष रखे जहद्जहल्लक्षणा ही है ऐसे नहीं कोई दो
ष च पुनः इस पक्ष कूं हे आभासवाद ऐसा गायन करते हैं॥
अज्ञानोपहित रखें ब चैतन्य ईश्वर है अंतःकरण तत्संस्का
रावच्छिन्न अज्ञानप्रतिबिंबित चैतन्य जीव है अज्ञानानुपहि
त चैतन्य शुद्ध है ऐसे विवरणकारक कहते हैं अज्ञानप्रतिबिं
बित चैतन्य ईश्वर है बुद्धिप्रतिबिंबित चैतन्य जीव है अज्ञानो

पहितप्रतिबिंबचैतन्यतुष्ठुहहै ऐसेसंक्षेपशारीरककारकहता
है इसपक्षमेंप्रतिबिंबजीवनानात्वबुद्धिभेदतेंहै प्रतिबिंबकेचपुनः
पारमार्थिकत्वतें जहदजहल्लक्षणाहीहैतत्त्वमस्यादिपदोंवि
षे इसहीकूं चपुनः प्रतिबिंबवादकहतेहैं अज्ञानविषेप्रतिबिंबि
तचैतन्यईश्वरहै अज्ञानोपाधीभूतचपुनःजीवहै ऐसेवाच
स्पतिमिश्रकहताहै चपुनः इसपक्षविषेअज्ञाननानात्वतें
जीवनानात्वहै चपुनः जीवजीवप्रतिप्रपंचभेदहै जीवकेहींअ
परतोअज्ञानोपहितत्वकरिकैजगदुपादानत्वतें प्रत्यक्षमेज्ञान
केसादृश्यतें चपुनः ईश्वरकेप्रपंचअरुजीवअरुअविद्या
केअधिष्ठानत्वकरिकैकारणत्वउपचारतेंहैं इति चपुनः येही
अवच्छेदवादहै अज्ञानोपहितप्रतिबिंबचैतन्यईश्वरहै अज्ञा
नप्रतिबिंबितचैतन्यजीवहै इतिवा अज्ञानानुपहितशुद्ध

चैतन्यईश्वरहै चपुनः अज्ञानोपहितजीवहै इतोचामुख्यवेदां
तसिंधांततएकजीववादनामहै येहीचपुनः दृष्टिसृष्टिवादकह
तेहैं चपुनः इसपक्षविषेजीवएकअपरोअज्ञानकेवशतेज
गत्काउपादानहै चपुनः स्नेरमेत्रहै दृश्यपंचपुनः सर्वप्रतीत
कहै देहमेदतेंजीवमेदआंततेहै एकहीकेचपुनः श्रापककै
कल्पीतगुरुशास्त्रादिउपबृंहितक्यावध्येहोयेप्रवणमनना
दिकीदाहर्ततेंआत्मसाक्षात्कारसंतेमोक्षहै चपुनः प्रकारदिकों
केमोक्षप्रवणअर्थवादहै चपुनः महावाक्यविषेतत्पदअने
तसत्यादिपदवतअज्ञानअनुपहितचैतन्यकेलिक्षणाककेउ
पस्थापकहैइत्यादिअवांतरभेदरविचारतोयोग्यहैं ननुव
स्तुविषेविकल्पकेअसंभवतेंकैसेपरस्परविरुद्धमतप्र
मारायहै इतिसीतेंकौनहींत्यागतोयोग्यहैकौनग्रहणकारतो

इसपक्षविषेलक्षणा
कोग्रहणअवांतरभेदहै

कोईएकजो
कहतेहैंप्र
कारदिमुक्ते
हैंऔरसर्व
बंधेहैंसोय
अर्थवादहै
जीवकेएक
स्वरूपतें

योग्यहै इतिचेन्न कौन इसप्रकार कहता है वस्तु विषै विकल्प
नहीं संभवता ऐसे स्यारगुवा पुरुषोवा राहु सोवा इत्यादि
विकल्पके वस्तु विषैहू दर्शनतें ननु सो कल्पना अनात्मकी
पुरुषकी बुद्धिमात्रककै प्रभवहै येतु शास्त्रायहै जीवेश्वर
वी विभागादि व्यवस्था इतिचेत् ईश्वर यककै बुद्धिमात्र होनु भ
कैर ईश्वरादिकें अद्वितीयात्मतत्व प्रमाराहै फलवत्त्वतें च पुनः अस्मा
तत्वतें च पुनः प्रमेयहै शास्त्रकै वा शास्त्रजन्यज्ञान विषयहै
तें पुनः जीवेश्वर विभाग कल्पना पुरुषबुद्धिमात्र प्रभव है
शास्त्रककै उत्पत्ति होताहै तत्वज्ञानके सहाइकत्वतें ननु पुरु
षबुद्धिमात्रप्रभवकै कैसे प्रत्युत्पनुवाद है इतिचेन्न राहु फल
वानके सन्निधरविषै अफलतरंगा है इसन्यायतें भ्रमरूप सिद्धु
केहू प्रत्युत्पनुवादके संभवतें इनककै द्वैतज्ञानककै अद्वै

नज्ञानकेआधारनेरस्तहै घटादिद्वैतज्ञानकेहूं अज्ञानसम्बा
ध्यंन्तरअद्वैतविषेप्रामाण्यकीसिद्धतातैंचपुनःज्ञानाज्ञानो
कैसमानाश्रयविषयत्वकेनेयमतैं जडविषेचपुनःप्र
माणाअरप्रवर्तनकेअभावककैंअज्ञानकेअनंगीकार
तैं रत्तिसन्अज्ञानावच्छिन्नचैतन्याज्ञानतेंहोतहांहूंअज्ञानव्या
वहारकेहोवणतैं चपुनःप्रमाणाकेअज्ञानज्ञापकरूपत्वतैं
अन्यथास्मृतकूंहूंप्रमाणाकीआपत्तिहोतीहै ऐसेवेदांतो
विषेसर्वत्रऐसीविधविरोध यहीपरिहारहै यहीव्याव
हारहै इत्तेवापाठः सोकहाहैवार्तिककारपादोने श्लो॰प
याययाभवेत्पुंसोव्युत्पत्तिःप्रत्यगात्मनि सासवैप्रक्रिया
सैया साध्वीसाचव्यवस्थितेतिप्रवृत्तेतात्पर्यविषयीभूतार्थ
है इकिहतु अवहैयं क्यात्याग है ऐसेनूतनवेरउद्योतेतहै संते
क्याभिन्नाभिन्नमतोकेभेदकार
जीवेश्वरकेस्वरूपकेंभिन्न
भिन्नकथनसैंतेहूनहींविरोध॥५

१५
15 हमोने रतिसातें नहीं कछु विरुध सो ऐसे जीव के उपाधिक वैं
अभिभूतत्वतें संसार की प्राप्त है परमेश्वर को तु उपाधिवशत्व
रहितत्वतें सर्वसत्ता रहिके है ऐसे भली प्रकार व्यवस्था होती है ननु
होवेनु पुनः अविद्या के वशत्वतें जीवेश्वर विभाग व्यवस्था तु पु
नः मानमेयादि धरते कर्म व्यवस्था कैसे है इति चेत् कहा पत
हे अविद्या है नाम जैसे कछु ऐसी रवि चारांस है रूपत्वतें च पुनः
रविनाश्रात्वतें परिरछिन्ना ह अरु ने वर्चनायत्वक वैं विचारासु
ह आवरण विहेप शक्तिद्वयवती सर्वांतरचेतात्मा कूं आवरण
करती है अमुले जैसें नयन के आगें स्थित होई सूर्यमंडल कूं
आवरण करती है तहां चहुब के आवरणसें ते अंगुलि के अभा
न पूसंगातें अधिष्ठान के आवरण विना रवे हेपके अनुपपत्तितें॥
च पुनः रतेनतें पी(छें सो अविद्या जीव कर्म के पूर्व पूर्व संस्कार यु

तैसेजीवके॥

आपरविषेप्राप्त

ईसीतेई प्रव चैतन्य वि दाभासप्र मारणपेहो वेना है॥

कहोई रेनेखलजगदाकारककैं परिणामकूं पावता है सो चपु
नः आपरविषे प्राप्त चिदाभासद्वारा चेतनादात्म्यकूं प्राप्तहोवे है
तैसेका सर्वकार्यकूं आभासद्वारा चेतनअनुस्यूत है॥ तैसे चपुनः
चैतन्यके दापवत् स्वसंबंध सर्वभासकत्वतें जगदुपादान चै
तन्य प्रमाणापेक्षावेना ही सर्वकूं सर्वदा भासयन् सत्सर्व ही
होवे है एतिनकके नतहां मानमेयादि व्यवस्था है एकं तु जीवविषे है॥
वे तैसे बुद्धिवृत्तिच्छिन्नतचककैं परे छिन्नत्वतें एतेन चिद्दाभेव्यहेकिंयो
गककैं एतेन एतेन अंतःकरणककैं जब जो संबंध होवे है सो
ई होनेबेतेश्वरके नजीव अनुभवकर्ता है नसो कार्यप्रसंग है
॥इसप्रकार एह प्रक्रिया शरीरविषे स्थित है सर्वशरीरव्यापक है
पक है सत्वप्रधान सूक्ष्मपंचभूतोंककैं आरब्ध अविद्याविवर्त
हर्यता ईश्वर इतिस्वकृत्ये सो अंतःकरणाख्य नेत्रादिद्वाराने

कसककैं योग्यघटादिकविषयोंकूं व्यापककैंतदाकारहो
रद्द ताहैइयतंतार्ज्ञवत्‌ तिसके चपुनःसूर्यालोकादिवत्‌शीघ्र
हीसेंकौंचरिवेगासजोहैंउत्पत्तिहोतेहैं सोचपुनःसावयवत्वतें
पदेराममानहोयादेह चपुनःघटादिकोंविषेसम्यकूंव्याप
ककैंदेहअरघटकेमध्यदेशविषेहूं चहोजैसेंअवच्छिन्नहोया
स्थितहोताहै तहां देहावच्छिन्नांतःकरणभागअहंकारा
ख्यकर्त्ताऐसेंकहीयतहै देहअरविषयकेमध्यवर्तीदंडाय
देश
मानतत्‌भागवृत्तिज्ञानाख्याक्रियाऐसेंकहीयतहै विषय
व्यापकजोतद्भागहैसोविषयकेज्ञानकर्मत्वकूंसेहककर्त्ताअ
कृ भिव्यक्तकेहोवरणांयोग्यऐसेंकहीयतहै चपुनःतिसत्रेधा
गअंतःकरणकेअतिस्वच्छत्वतेंचैतन्यतहांप्रगट होताहै
तिसअरभिव्यक्तचैतन्यकेएकत्वसेंतेहूं अभिव्यंजकांतः

करणभागमेंइतनेंखेधाकहाहोताहै कर्तृभागावछिन्नचे
तन्यप्रमाताहै रुकेयाभागावछिन्नचेतन्यप्रमाणहै विष
यविषयोगयत्वभागावछिन्नचेतन्यप्रमेयहै कयाप्रमाहै
इत्तें तुपुनः विषयगतअज्ञाननाशचेतन्यहीप्रमेयहै सो प्रमेय
ईहांचपुनःज्ञातहोयाफलहै ईहांचपुनः जेसपहरविषेअं
तःकरणावछिन्नहैजीव चपुनः जेसपहरविषेसर्वगतहै
असंगहै अरविद्याविषप्रतिबिंबहैऐसाहैजीव तहांदोनों
पक्षोंविषेप्रमाताचेतन्यकेउपरागार्थअरविषयगतचेतन्य
केआवरणभंगार्थहै अंतःकरणकीवृत्ति॥ जेसपहरविषेअं
तःकरणावछिन्नहैजीवतेसपहरविषेप्रमाताचेतन्यकेउप
रागार्थहै अंतःकरणकीवृत्ति अरजेसपहरविषेअविद्या
वछिन्नसर्वगतहैआवृतहैजीव तेसपहरविषेजीवकेहीजग
है ऐसाहै

नु पुनः धर्माधर्मादिकों विषे स्वच्छत्ववा अनावृतत्व संते हूं कामसंकल्पादि मन ही है इसप्रवृत्तितें तिनधर्मादिकोंके स्वतः
उपादानत्वकरिकै सर्वसंबंधत्वतें आवरणभंगापहि वृत्ति येवि
षेकहे नेनु चिदुपरागापहि वृत्ति इसपदकरि विषे स्वतः अंतःक
रणसंबंधी धर्माधर्मादिकों चपुनः ब्रह्मका वृत्ति विना ही स्वयं
दाभान होवे नहीं होता चैतन्यके तदाकारत्वके अभावतें
स्वच्छ है ब्रह्मचैतन्य विषे आवरणतें तैसे तदाकारताका अ
भाव है तिनकुं करिकै भान नहीं होता ब्रह्मचैतन्यका अनावृतत्व हू
प्युक्त रजतादिकों विषे अस्वच्छत्वतें तैसे तदाकारताके अभा
वतें नुपुनः धर्माधर्मादिकविषे अस्वच्छत्ववा आवृतत्व तें तदा
कारताके अभावतें भान नहीं होता इसहेतुतें स्वच्छ है आवृत
ब्रह्मविषे प्रमाणावृत्ति करिकै तदाकारता है अरु अनावृत्ते हू अ
प्रमितब्रह्म
स्वच्छ प्युक्तरजतादिकों विषे अविद्यावृत्तिकी तदाकारता है
नुपुनः अनावृतस्वच्छ सुखदुःखादिकों विषे स्वतः तदाकारता
भान नहीं प्युक्तादिकोंका ५

प्युक्तरजत अविद्या
कार्यत्वतें अंतःकरण
के अनावृतत्वसते अविद्या
कार्यत्वतें अस्वच्छ है

इति न स्तु खड:खारिक्कोय १
तोभीप

कर्के भान है ऐसे न अंतःकरण के संबंधमात्र करकै भान
का प्रसंग है ॥ ननु ब्रह्म के कैसे आवरण है ऐसे ईश्वर स्वप्रका
शत्व करकै सर्वज्ञत्वतें ऐसे है स्वसंबंध सर्वभासकत्ता करकै
सर्वसहूं है अंतःकरणावच्छिन्न जीव के अज्ञान विषय के
कै आवृत्त है इस कथन करकै ऐसे तें ब्रह्म जगत् का उपादान है
इस पक्ष विषे चैतन्य उपरागार्थ च पुनः आवरण भंगार्थ है वृत्ति
तु पुनः जीवोपादान पक्ष विषे आवरण भंगार्थ ही है वृत्ति ननु
एक ही घटादि के ज्ञान करकै आवरण के भंग विषे स
र्व मुक्ति का प्रसंग है अज्ञान के एकत्व तें नाना अज्ञान पक्ष विषे
बहु एक ही जीव के एक अज्ञानोपाधित्वतें सर्व मुक्ति का प्रसंग
होता है इति चेन्न उत्तेजकत्व करकै मणि जैसे वृत्ति आवरण के
आवरण के अभिभव के अंगीकार तें तैसे स्व पुनः ॥

दृष्टांत करकै कहते हैं मणि द्वय प्रकार की है एक दाहक उत्तेजक नाम
है अरु दूसरी तु दाह प्रतिबंधक नाम है तैसे वेद्यमान संते उत्तेज
क जलावरण कूं असमर्थ होवै है ननु ... होवे है तैसे घटादि ज्ञान है

अंतःकरणावच्छिन्न जीव के सर्वगत ... अविद्या प्रतिबिंब जीव के

[illegible]

[illegible]

प्रमा॥

वृत्तिविषेज्ञानउत्पत्तिसंतेहूं अवच्छेदकाभावतें क्या आवरणकेनाश विषेअसामर्थ्यतें विद्यमानहूं अविद्यमानसमहै ६

१८ 18 प्रमातोजन्यांतःकरणवृत्तेकोअभावहैसहकृतजोसको
ऐसाजोअज्ञानहै वस्तुविषेसत्तेभातेसंतेहूं नहैनभास
ताहै ऐसीप्रतीतिजननकूं समर्थआवरणऐसेकहीयत
है वृत्तिविषेजातहूंतुपुनःअवच्छेदकाभावतें विद्यमानहूं अ
विद्यमानसमहीहैइति नहींस्वकार्यकूंसमर्थ क्याअज्ञान
तिनककैंआलंभेभूतऐसेकहीयतहै ननुएवंसत्तेब्रह्मज्ञान
ककैहिंअविद्याकेआनेवृत्तसंतेआनेमोंहिप्रसंगहोवेहै।
नहीं तत्वमस्यादिवाक्यार्थज्ञानतें अविद्यानिवृत्तअभ्यु
पगमतें ज्ञानकेप्रमाभावककैंस्वविषयअविद्यानिव
र्तकत्वतें महावाक्यार्थज्ञानकेहीअबाधितविषयताक
केंप्रमात्वतें ननुब्रह्मज्ञानातिरिक्तकेअप्रमात्वसंतेजगत्कूंब
प्रमाव्यवहारनहोवेऐसेकहेंतहांकहतेहैं प्रत्यक्षादिप्रमाणोंके

यै अर्थापत्तिप्रमाण है

अन्यत्र अदर्शन है जे कहे है दर्शन निवृत्ति के चिंतकर है

तेपुनः बाधित विषयक कै भ्रमत्व संते हूं व्यवहार के समर्थक कर्के
प्रामाण्य के अंगीकार तें ननु ज्ञान तें अज्ञान की निवृत्ति है ऐसे संते
अन्य करि तेस का अदर्शन होवे इति चेन्न त्राह ज्ञान तें जो अज्ञान की
निवृत्ति है च पुनः तेस का अन्यत्र अदर्शन आदि के चेत्कर है स्वानुभ
व के रसे हत्व तें जैं ज्ञान कर्कै अज्ञान की निवृत्ति न होवे तब जीवन्मुक्ति
ना हूं न होवे अन्यथानुपपत्ति के क्या अर्थापत्ति प्रमाण के सर्व तें
बलवानत्व तें तदुक्तं अन्यथानुपपत्तिश्च दृश्यवस्तु प्रसाधि
का स्येन स्तु दृष्ट एवमतं सैव सर्वबलाधिके इति १ अथवा मूला
ज्ञान की ही अवस्था हैं घटादि विषयावरण [illegible] न ले हैं अज्ञान
के ज्ञान प्रागभावस्थानीयत्व कर्के जितने ज्ञान हैं तितने अज्ञान
हैं ऐसे युक्ति तें च पुनः एक ही ज्ञान कर्कै एक ही अज्ञान के ही नाश
तें घटादि ज्ञान कर्के आवरण नाश संते हूं नहीं कोई हूं अनुपपत्ति

[illegible]

का घटादि
अवच्छिन्न
चैतन्य का
आवरण
नाश होता है
न मूलाज्ञा
न

ननुअनुमानादिकोंकके आवरणनिवर्त्तहोताहैवान आद्य
विषेसाक्षात्कार भ्रमरिशादिकमोहादिककाअनुमानादिक
ककेनिवर्त्तकाप्रसंगहोताहै चपुनः शंखपीतादिककाप्रेता
दिकअनुमानककेनिवर्त्तकाप्रसंगहोताहै भ्रमको अधिष्ठान
अज्ञानोपादानत्वककैअज्ञानकीनिवर्त्तककैभ्रमकीनिवर्त्ति
चपुनःयौक्तिकज्ञानककैअसत्वविषेअपेक्षाकीनिवृत्तहोतैहै
साक्षात्कारार्थश्रवणमननादिकोंकीअपेक्षानहोवे २ द्वितीय
पक्षविषेवाक्यादिव्यवहारनहोवे प्रतिबंधकेविद्यमानत्वतैं न
होकहीयतहै आवरणद्विविधहै एकअसत्वापादकहैअंतःक
रणावच्छिन्नसाक्षीनिष्ठ दूसरअभानापादकहैविषयावच्छि
न्नअसत्चैतन्यनिष्ठ घटकूंमैनहींजानताइत्यनुभयावछेदअनु
भवतं नहीआद्यजोहै परोक्षापरोक्षसाधारणज्ञानमात्रककै

निवृत्ति होता है अनुमिति विषैं वृत्त्यादि कों विषै नहीं प्रतीति ह
के अनुदयतें इसरा जो हेतु पुनः साक्षात्कार कर्के ही निवृत्ति हो
ता है यदा प्रत्यय है यदाकार है ज्ञान तदा प्रत्यय है तदाकार है अज्ञा
न कों नाश करता है इस नियमतें च पुनः परोक्ष ज्ञान के विषयें ॰
इंद्रिय सन्निकर्ष के अभाव कर्के अंतःकरण मात्र आश्रयत्व
तें अपरोक्ष ज्ञान के ही विषयें इंद्रिय सन्निकर्ष व्यापार जन्यत्व चपुनः
कर्के विषयांतःकरण जन्यत्व कर्के उभयत्र ऐक्यतें सोकं
हा है परोक्ष ज्ञान तो नतु पे इसत्वावृत्ति हेतुता अपरोक्ष ध्येयान
नु पे इ भानावृत्ति हेतुता इत्ति इतेन कर्के अनुमानादि कों विषैम
सत्वावरण के नाशतें व्यवहार है अभानावरण का निवृ
त्ति कैं च पुनः सोपाधिक साक्षात्कार भ्रम की निवृत्ति है इ
ति तेसा तें निर्धर्मक हूं आत्मा का अविद्या अंतःकरणतादा

ता ॥ २

त्म्याध्यासतें तद्धर्मकर्तृत्व भोक्तृत्वाद्याध्यास उत्पन्न होता है
ननु त्वन्मतते क्यानुसार मत विषे अविद्या अनिर्वचनीयाख्या औ
से अंगीकार तें ये कर्तृत्वादिक अंतःकरण धर्म आत्मा विषे
अध्यास करते हैं ते अनिर्वचनीय होये तहां उत्पत्ति होते हैं औ से
कहते हो तैसे संतेच पुनः व्यावहारिक प्रातिभासिक भेदकर्के
कर्तृत्वभोक्तृत्वादिक रहे विषे धर्म अविभास होवें नहीं होवें तो स
त्याभिमान कर्के अविवेक तें सकल धर्म विषे हुए ही अंतः
करण के आत्मा विषे अध्यस्त कर्के द्रूप के अभाव तें वा रतें सी
तें एक ही आत्मा के उपाधिभेद कर्के प्रमात्रादि भेद व्यवस्था
न बनता है नहीं सो मातम की आपत्ति न वा विरोध है औरहु व्यव
स्थास्य पत्तर आगे तें प्रसिद्ध करेंगे तैसी तें भावरूप आत्मा के
सुषुप्ति विषे अव्यभिचारत्व तें देहें इंद्रियादिकों के व्यभिचारी वे

चपुनः२

तैंचपुनः स्वरूपत्वतैं नहोनेतैं आत्मबुद्धित्तेमो वाशयोंकी आं
तहै ऐसे अपरनेबस्अंतप्रमाणत्वसे हहै इतते १ ननु तेन्आ
त्माकेलेधर्मकत्वसंतैं प्रमाणादिव्यवहारकेअध्यासमूलत्वसे
ते आत्मत्याज्ये ऐसे इत्यादि शास्त्रप्रमाणोकेअप्रमाणप्रसंगः
स्यात् क्याहोवे अकेशीचपुनः आमोक्षआत्माकेप्रवृत्तेकेअनंगी
कारतैं वेदकेअप्रमाण्यककेकाहेतैंभ्रमत्वहूं रसेहहै तोसबकेतन्मा
त्रगामत्वत्तें क्यारत्तेसभसतकेशास्त्रमात्रगम्यत्वतें शास्त्रयोरनेत्वा
दित्ते न्यायात् तैसेसंतेचपुनः वेदकेप्रामाण्य तोई प्रमाणादिव्य
वहारकेसत्यत्वेअंगीकार है ऐसे आशंकाककेकहातेत्वज्ञानतें
पूर्वअप्रामाण्यअंगीकार करीयततैहै वाउर्ध्व नहीं आयत्वेष
सर्वेप्रमाणोकेअविद्याविषयत्वककेरत्तेनरत्तेनरदेशास्त्रायोरवेष्वेबा बानोंके
धकेअभावतैं नहीं प्रत्यूहप्रामाण्य इस्तरवेषत्तुपुनः इष्टापत्तहीं

है एही कहते हैं श्लोक न वर्णा न वर्णाश्रमाचारधर्मा न मे धार
णा ध्यान योगादयोपि अनात्माश्रयाहंममाध्यासहाना तदे
कोवशिष्टः शिवः केवलोहं २ न वर्णाः वर्ण ब्राह्मणादिक च्यार वै
श्य शूद्र हैं आश्रमाश्च आश्रम ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थ
संन्यासि कुं हैं आचाराः स्नान शौचाचारादि हैं धर्मा ब्रह्मचर्य गुरुसेवा
आदि हैं इहां ब्रह्मचर्य गर्भवशीलतपुरुषों के वर्णो के आचार च
पुनः धर्मा आश्रमो के हं आचार धर्म च पुनः पाईयत हैं धा
रणा बाह्य विषय त्याग कै मन का स्थैर्य है ध्यान परमात्म चिं
तन है योगश्चित्तवृत्तिनिरोध है आदि शब्द करि के श्रवण मन
न निदिध्यासन ग्रहण करीयत हैं सकल्पों के ज्ञानों तर का
ल विषे अस्तत्व विषे हेतु कूं कहते हैं अनात्माश्रया हंममा
ध्यासहानात् अनात्मा आत्म विरोधनी अरु विद्या है तदाश्रय

क्या जो

कयासोई है अध्यास जिसका ऐसा जो अहंकार ममकारादि अध्या
स है तिसके समूल हूं तत्वज्ञान करकै नाशतें [illegible] युक्तवर्णा
श्रमादिव्यवहार नहीं ये अर्थ है २ वर्णाश्रमादिव्यवहार को मि मा ३
थ्याज्ञान मूलत्व करकै मिथ्यात्व इत्युक्त बनेनिमित्त तें व्यतिरेक २
सुषुप्त विषे व्यतिरेक कूं कहते हैं श्लो० न माता न पिता न वा न देवा
न लोका न वेदा न च यज्ञा न तीर्थं ब्रुवंति सुषुप्तौ निरस्ताति शून्या
त्मकत्वात् तदेको वशिष्टः शिवः केवलोहं २ माता जनक स्त्री है
पिता जनक पुरुष है देव इंद्रादि हैं आराध्यरूप लोक तदाराध
न फल स्वर्गादि है वेद लौकिक प्रमाण पुरुष [illegible] प्र [illegible] रहिताहि लौकिक प्रमाणतें भिन्न
तैं साधनता का प्रतिपादक च पुनः फल प्रतिपादक अपौरु
षप्रमाण वाक्य हैं यज्ञ स्वर्गादि साधनभूत ज्योतिष्टोमादि
हैं तीर्थ गंगादि साधनाभूत कुरुक्षेत्रादि देश हैं इस प्रकार पा

आत्माके ३

देहाभिमान २   स्वभावका ३   दिमारा ५

पकर्मसाधनहूं उपलक्षणीयहै सकल्योंकेदेहाभिमानमूलत्व
तें इतिसकेअभावसेंतेंस्वतःसेंबंधकेअभावतेंअविद्यमान हैं इ
त्यर्थः तैसेचपुनः प्रकृतपश्रुतिहै अत्रपिताऽपिताभवति माता
ऽमातालोकाऽलोका देवाऽदेवा वेदाऽवेदास्तेनोऽस्तेनोभवति भ्रूण
हाऽभ्रूणहा चांडालोऽचांडालः पौल्कसोऽपौल्कसः श्रमणोऽ
श्रमणः तापसोऽतापसः अनन्वागतंपुण्येनअनन्वागतंपापे
न तीर्णोहितदासर्वान्शोकान्हृदयस्यभवतीत्यादिश्रुतिः अभिमा
नाभावेसर्वानर्थमनुवदंतेति ॥ ननुसर्वव्यवहारकेअभावरुपवेष्य
न्यहीहोताहै न येहीकहतेहैं इतिनिरस्ताऽशेषशून्यात्मकत्वादितिअर्थ
येइनिरस्ताहै अशेषशून्यात्मकत्वजेसतेंतथाभीवप्रधानकहाहै ॥
इतिसकेसुषुप्तविषेंसाधकत्वतेंपुनः उत्थानकेअयोगपत्वतेंचपुनः
॥ अरेवेनाशीवाअरेअयमात्मानुच्छित्तिधर्मामात्राऽसंसर्गस्त्वः

तिसआत्माकेसुषु   निवृत्ति ५   अरेवेनाशी १   इत्यादिश्रुतीअभिमाने
प्तिविषेनिवृत्तिकेसा   जेसुषुप्तिविषे   केअभावरुपविषेसर्वानर्थ
धकभावतें २   अआत्मान   केनिवृत्तिकूंकहतीहैयारवार
होवेंतोपुनउत्थाननहोवे

स्यभवति यद्वैतन्न पश्यति पश्यन्वैतन्न पश्यति न हि द्रष्टु
र्दृष्टेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् न तु तद्द्वितीयमस्ति त
तोऽन्यद्विभक्तं यत्पश्येदित्यादि श्रुतीयों करकैं च पुनः आत्म
चैतन्य के नहीं सुषुप्ति विषे शून्यताये अर्थ है ऐसा कहते हुं ये
स्फूर्ति ऐसे रूप न न्याय करके फेर हूं ऐसा कहते हैं यद्वा
सेरस्त है अनुनादि करके जे सबके अर्ते क्या अद्वितीय है शून्यं
क्या ऐसे धर्म के है जो ब्रह्म तदात्मकत्वात् क्या रते सरूपत्वके
तैसे कहते हैं यद्वै पुरुषः स्वपिति तेनाम सत्ता सोम्य तदा संपन्नो प
भवति सयथा प्रियया स्त्रिया संपरिष्वक्तो न बाह्यं किंचन
वेद नांतरमेवमेवायं पुरुषः प्राज्ञेनात्मना संपरिष्वक्तो न
बाह्यं किंचन वेद नांतरं स्मरति ऐसेन कैं जगताकारता भूत
सर्वज्ञ सर्वशक्ति परि पूर्णानंद बोध रूपक कैं ब्रह्मसों एक
जैसे ये पुरुष प्रिय स्त्री साथ संश्लिष्ट होया न बाह्य कछु जानता है न
अंतर कूं इस प्रकार ही जो प्राज्ञ आत्मा रूप स्त्री कूं संश्लिष्ट होया

कत्वतें असंसारी हीहै जीव इत्तेरसे हूं ३ इसप्रकार तौ लोंनी
न पक्षीकोंकर्के वादीयोंके विरोध निराकरण पूर्वक त्वंप
दार्थकूं निरधारण कर्या है अब तत्पदार्थकूं तैसे हीं निर
धारण करबे योग्य है तैसा रनैरमैत्तरनेराकार्यकयावादर्थवा
दीयोंके विरोधकूं इहां दिखावते हैं ननु ब्रह्म साथ्य जीवका
ऐक्य नहीं बनता है तैसे कहता है तद्धेत्वाच्च जगत्कारण
प्रसन्न सदेव सोमेदमग्रत आसीत् एकमद्वितीया वाक्यकके प्रतिपा
दितहै च पुनः जगत्कारण प्रधान अचेतन है ऐसे सांख्य
कहते हैं पशुपति हीं जगत्का कारण है सो चेतन हूं जीव तैसे
न है तिस जीवका उपास्य हीहै ऐसे पाशुपत कहते हैं भगवा
न्वासुदेव ईश्वर जगत्का कारण है तिससें उत्पत्ति होता है संक

सर्वज्ञत्वादिवांधेनुवत्सहैं अदृष्ट मात्रजगत्का कारण है

ब्रह्मविवे॰

र्षणाख्य जीव तिसतें प्रद्युम्न मन तिसतें अहंकार अनुरुद्ध
इसक कैं कार्यत्वतें जीव का तिनें साधन ब्रह्म वासुदेव का अ
त्यंताभेद है ऐसे पंचरात्रक कहते हैं परिणामी नित्य है है
सर्वज्ञ है भिन्नाभिन्न है जीवतें इति जैनाः च पुनः रंगे दंडी है ऐ
से कहते हैं नहीं सर्वज्ञादिक के युक्त ब्रह्म वेदों के क्रियापर
त्व कै तिहां तात्पर्य के अभावतें किंतु वांधेनु आदिवत्स
वैसेत्वादि है ए मात्र जगत्का कारण है परमाणवादि है वा जीव का
उपास्य है सो सर्वज्ञ इति मीमांसक कहते हैं हैरनित्यज्ञानादि
मान ईश्वर सर्वज्ञ पृथ्वी आदि कार्यलिंगानुमित सो च पुनः
जीवतें भिन्न ही है ऐसे तार्किकादि ईश्वर कूं निमित्त कारण
कहते हैं हरिलोकरखेसान सर्वज्ञ ऐसे सौगत कहते हैं क्ले
कर्मविपाकाशयों कर के अपरामृष्ट असंश्लिष्ट पुरुषविशेष
क्या

षरनित्यज्ञानस्वरूपप्रधानोज्ञासत्वगुणविषेषपरनिफलतेना
ककैसर्वज्ञसंसारीपुरुषतेंविलक्षणताहीईश्वरहैऐसे
पातंजलकहतहैं अरद्वितीयपरमानंदहीचपुनःब्रह्मसोजी
वकोवास्तवस्वरूपचपुनःमायाकरकैसर्वज्ञत्वादिविशिष्ट
जगत्काउपादानचपुनर्निमित्तकारणऐसेउपनिषदक
हतेहैं ऐसेवादीयोंकेविरोधककैसंदिग्धतत्पदार्थविषे
षेउपनिषद्रूपपरिशोधककेतिसकोनिर्णयनहीक
हताहैभगवान् श्लोक नसांख्यंनयोगंनतत्पंचरात्रं नजै
नंनमीमांसकादेर्मतंवा विशिष्टानुभूत्याविशुद्धात्मकत्वे
र्ह्देकोवशिष्टः शिवःकेवलोहं ९ आदिशब्दकरकैअनुक्तो
कागहणहै नतोलौं अचेतनजगत्काउपादानहै तदिहतब
हुस्यांप्रजायेय ऐसेईक्षणपूर्वकसृष्टिकेप्रवणातें अने
उत्पातेहोवें

जो होवे ५ प्रसंगप्राकृतिपुरुषोंके ५ ऐसे ४

नजीवेनात्मनानुप्रविश्येनुप नामरूपे व्याकरवाणीति ऐसे च पुनः
जीवके आत्मत्वकथनतें येनाश्रुतं श्रुतं भवत्यमतं मतमवि
ज्ञातं विज्ञातं इति च पुनः एकके विज्ञानकर्के सर्वके विज्ञातप्र
तिज्ञानतें एजैसे विज्ञात संतें सर्व विज्ञात होता है प्रधानज्ञानक
केँ च पुनः तब प्राकृतिपुरुषोंके जानबेकूं अनात्मत्वतें एतदा
त्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो ऐसे च
पुनः तिसके अभेदको नववार उपदेशतें तस्माद्वा एतस्मादा
त्मनः आकाशः संभूतः ऐसे प्रत्यगात्मतें अचेतनके जगत्का
रणत्वविशेषके विचित्ररचनाकी अनुपपत्तितें च पुनः प्रधानमहदा
दिके अप्रमाणिकत्वतें न सांख्यमत साधु है इस प्रकार पाशु
पत पांचरात्रके जैनके च पुनः मतश्रुतियुक्तिकर्के बाधितत्व
तें अयुक्त है विरोधत्वतें श्रुतीन अर्थकूं प्रतिपादन करती है
ऐसे कहते मीमांसकका मत च पुनः नहीं युक्त विरोधत्वके

विरोधिज्ञोपजातेंक्रीया क्यांअर्थवादसूत्रविषे वेदांतवाक्यविधिज्ञोपनहींये
कोकरताहै ज्ञोऐसे तें विरोधिज्ञोपकहाहै १ ज्ञाप्यतें सोविरवावतोहै १ =

ऐसे धत्वतें अर्थवादाधिकरणन्यायतें विरोधिज्ञोपत्वतें नहीं
चपुनः वैषम्यतें स्वतःप्रयोजनवान् अर्थके अप्रातिपादक वा
युहै देवता अरपीठ अन्नादि यसस्वामि तौका देवता ऐसे प्र
कारवाक्योंका स्वाध्यायविधि क्याविधिज्ञोषकापठन तैसे के
ग्रहणकी अन्यथाअनुपपत्तिक कै प्रयोजनवान् अर्थपरत्व
कल्पनीयविषे ज्ञाणभावना अरइतिकर्तव्यताविषे सोकोह
विधिकें संप्रदानभूत देवतादि स्तुतिद्वारक केतदंगवाक्यवि
धयंज्ञापूरकत्वतें नष्ट धरपन्यायककेतउभै कथवा
कथताहै ऐसे अर्थवादाधिकरणविषे निरूपीतहै चपुनः
वेदांतवाक्यजन्यज्ञानतें साक्षात् हीपरमानंदप्राप्ति चपुनः
निःशेषदुःखकीनिवृत्ति पुरुषार्थपाईयतहै निराकांक्षत्वतें
नहीं अन्यशेषभावना प्रस्तुतविधयवयाउलटाविधीजोहैं ऐसे

ऐसे सदेव
ताकादेवता
वायुहै २

मकेसपूर्णसंतेहंतैसके ज्ञाणभावना
अरइतिकर्तव्यताकीआकांक्षाहै ६
सोनैतैसके ६

अंतःकरण सत्वप्रधानादिकी कर्के ५

सुहृद्दारातें च्छेत्राता कूं भजते हैं इत्ते एतेसौतें प्रयोजनवान्
अबाधितानुज्ञातज्ञापकत्वकर्के वेदांतोंके स्वतःही प्रामाण्य
तें हैं होवत्स सिद्ध भ्रैसेनही मीमांसकमतसिद्ध चपुनःता
र्किकादिमत तत्त्वमसि अहं ब्रह्मा स्म्यय मात्माब्रह्म सत्यं
ज्ञानमनंतं ब्रह्मेत्यादिश्रुतें बाधित हैं एकमेवाद्वितीयं नेह
नानास्ति किंचनेत्यादिश्रुतें बाधित हैं चपुनः एमेआरमेत्व
चपुनः ह्रासिकत्व आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः इत्यादिश्रुतें
कर्के बाधित हैं ईहां चपुनः सकल्योंमतोंके असत्व कों प्रति
ज्ञान विषे एविपद्धहास्यकत्वादितें हेतु है अर्थ ये रनेर्विकल्पक
अद्वितीयचैतन्यरूपत्वतें ॥ ईहां हेतु है एविशेषणानुभूत्यैरत्ते
अर्थ ये सविकल्पकअनुभूततें व्यावृत्त जो है त समस्यादि
वाक्यजन्याखंडानुभूतों कर्के इत्यर्थः एतेन कर्के सर्वव्यापक
हैं तिस

कोहेतें विपद्धहा
स्यकत्व है

आरात्मात्रहैतिप्रव
ककेओर हं चैतन्यवारे औसे ब्रह्मके अणुत्वहै श्रुतितें चैतन्य
मात्र रेखनी मात्र

अद्वितीय परमानंद रूप चपुनः ब्रह्म है इत्तिरसिद्ध ६ ननु सोऽयं
बोलितोमा अतोर तीयार नैति ब्रह्मणो अणुत्व श्रुतेः अणुष्ट मात्रपु
रुषः आरागमात्रोह्यवरोपिदृष्ट इत्यादिश्रुति प्रतिपा
दित कर्के अणु जीवो के भिन्नत्व तें चपुनः न ब्रह्मके सर्वव्याप
कत्व है औसे आशंका कर्के ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्तात्पश्चाद्ब्रह्म
दक्षिणतश्चोत्तरेणाधश्चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं व
रिष्ठं तदेतत् ब्रह्मापूर्वमनपरमनन्तरमबाह्यमित्याद्याः श्रुत
यो इत्यादि जो श्रुती हैं सो विशेष हीब्रह्मकूं प्रतिपादन करती
हैं औसे पूर्वोक्तकूं ही दृढ करता हो या कहता है श्लोक नचो
र्ध्वं नचाधो नचांतर्न बाह्यं नमध्यं नतिर्यङ् नपूर्वापरा दिक्
व्यापकत्वादखंडैकरूप स्तदेकोवशिष्टः शिवः केवलोऽहं
व्यापकत्वात् आकाशजेसे व्यापकत्वतें आकाशवत्सर्व

तें मैंख स्तेख२ कैसें है आकाशतें

गतप्रत्यनेत्य इतिश्रुतेः आकाशके व्यापकत्वतें इति वा ज्यों वैसा आकाश खेष है जो व्यापक है
याना काशात् महतोमहीयानिति श्रुतेः जीवके सैंकल देह
व्यापी चैतन्यके उपलक्षकके महत्वसतें हं उपाधिके धर्मो
के अध्यासकके आरागमात्रत्वकथनतें बुद्धेर्गुणेनात्मगु बुद्धिके गुणो साथ आत्मा के अध्यासकके च पुनः
णेन चैव आराग्रमात्रो ह्यवरोपि दृष्ट इतिश्रुतेः च पुनः अल्प
केसूक्ष्मत्वअभिप्रायकके अणुत्वकथनतें ज्ञेयस्वरू
पहै ५ ननु ब्रह्मके जगत् उपादानत्वतें उपादान उपादेयके अ
भेदतें विचित्र जगत्के अभिन्नत्वकके ब्रह्मके दुःखरूपत्वतें
तद्भिन्नत्वकके जीवके परमपुरुषार्थ नहीं ऐसे आशंका
करि ब्रह्मके स्वप्रकाशपरमानंदस्वरूपत्वतें संपूर्ण जगत्
भ्रमके अधिष्ठानत्वकके कारणव्यपदेशातें अध्यस्तसाथ
च पुनः सम्यक्सें संबंधके अभावतें न तहां अनर्थलेश है

एही कहत्ता है श्लो० नस्थूलोनकृशोनरक्तोनपीतो नकुब्जं
नवामनं नह्रस्वोनदीर्घं अरूपं तथा ज्योतिराकारकत्वात्
तदेको वशिष्टः शिवः केवलोहं ६ कुब्जं क्या अणुपनं वाम
हतु नही मैं तिनकके अणुमहद्ध्रस्वदीर्घ ये चतुर्विध परिमाण
के निषेधतें द्रव्यत्वका प्रतिषेध है रूपकूं प्राप्त होवे सो कहीये
रूपक्या प्रमेय न होवे सो जो सो कहीये अरूप तिनकके स्वक
ल्पों होइ द्रव्यगुणकर्मादि पदार्थों तिन तिन वारीयोंकके अं
गीकारोंका निषेध है तथा च श्रुतिः अस्थूलमनण्वह्रस्व
मदीर्घमलोहितमित्याद्यः अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं
तथारसं नित्यमगंधवच्च यदित्याद्याश्च सर्वाणि श्रुतयं
२ परमात्मस्वरूपं प्रतिपादयंति श्रुतीयोंके अर्थकं न्याय
करके निर्णय ताई हेतुकूं कहते हैं ज्योतिराकारकत्वादिति स्व

प्रकाशज्ञानरूपत्वकर्कैं अप्रमेयत्वतें प्रमेयत्वसंतै घटा
दिवत् जडत्वतें असत्तापत्ततें एतत्प्रमेयं ध्रुवं इत्ति श्रुति वैयर्थ्य
र्थ्य: ६ ननु एकैसकै ब्रह्मभावका उपदेश करीयत है ब्रह्मकै
वो अब्रह्मकैवा नहीं अंतका विकल्प रूपतैसकै जडत्वतें असत्व
तैं च पुनः नप्रथम है उपदेशकै आनर्थक्यतें ब्रह्मभावकै स्व
तः ही सिद्धत्वतें जीवकै स्वतः ही ब्रह्मसंतै हू अविद्याव्यवधा
नकै सानकर्कैं निवर्त्यतत्व ऐसैं कहैं तु नहीं अविद्यानिवृत्त आ
त्मरूप भिन्नत्वसंतै द्वैतापत्ततें ब्रह्मकै असिद्ध प्रसंगतें च पुनः सो
कहा है वार्तिककार विषें अव्यावृत्त अननुगतवस्तु ब्रह्म ऐसैं क
हीयत है ब्रह्मका अर्थ दुर्लभ ईहां होता है इस विषें क्या जे क
हैं अविद्यानिवृत्त ब्रह्म आत्मैं नहै ऐसैं संतै वस्तुकै ऐसैं आत्मभिन्न
त्व विषें च पुनः उपदेशकै आनर्थक्य कहा है तहां ... प
= सो ... ।

तहांआचार्यकूं
गीकार तो
नहूं रकरतो है

२८
28 रमार्थतें एकलोभाववांछितहै एकेंवाप्रातीततेंपुनः तहांआ
चार्यकूं दृष्टापत्तिकरिकैं इरकरतेहैं श्लोक नशास्तानशास्त्रंन
शिष्योनशिक्षा नचत्वंनचाहंनचायंप्रपंचः स्वरूपाव
बोधोरविकल्पासहिष्णुस्तदेकोवशिष्टः शिवःकेवलोहं
७ शास्ताउपदेशाकर्त्ता शास्त्रउपदेशकासाधनहै शिष्य
उपदेशकाकर्महै शिक्षाउपदेशक्रियाहै त्वंश्रोताहै अ
हंवक्ताहै अयंसर्वप्रमातासंनिधापत्रहै प्रपंचदेहेंद्रिया
दिअनर्थरूपहै परमार्थतेंनहींयेअर्थहै इसरविकल्प
कपाप्रातीततेंपुनः इसकूंनिराकरणकरतेहैं स्वरूपेति
अयमर्थः यद्यपिआविद्यानिवृत्तआत्मस्वरूपहैवाअना
त्मस्वरूपहैइत्यादिविकल्पकुर्वेकिसीएकफलकूंनिरू
पणकरवेकूंनहींशक्यहै यत तथापि स्वरूपावबोध

रनिश्चयकर
नहीं जैसीतें दृष्टकके अनु
उपपन्ननाम वा

स्विसानफलका अनुभवकरीयतहै नचपुनः ये कयाहै औसे स्विकल्पनीयहै सर्वद्वैतके उपमर्दनकके स्विकल्पकेन सहनातें नहीं रनिश्चयकके दृष्टका अनुपपन्ननाम तैसे चपुनः प्रवृत्तिहै नरनेरोधोनचोत्पत्तिर्नबद्धोनचसाधकः नमुमुक्षुर्नवैमुक्तः इत्येषापरमार्थता ब्रह्मवाइदमग्रआसीत् तदात्मानमेवावैदहं ब्रह्मास्मीति तस्मात्तत् सर्वमभवदित्याद्यः पूर्वहूं ब्रह्मस्वरूपकेहीजीवकेभानतें ब्रह्मभावकूं देखावतीहै चपुनसर्वद्वैतकूं निवारणकरतीहैं ७ नन्वात्मकिंस्वपुकाग्राचेतन्यस्वपत्वतें भासमानसंते जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिव्यवस्थाकैसेहै नचपुनःभानहीहैव्यवस्था औसेकहनायोग्यहै तैसेंसंतेसर्वकेहीस्वप्रत्वापन्नहोवेहै इतिचेन्न लहरगताकके तीनोंकेहू स्वप्नत्व

कैसास्वप्न
आतनहीहै

हांतुरविपय पाहिलैंक हाहै चोतेल एकामहै

केवलस्वप्नलहरण सुसिधसंते

ससते पूरते भासतत्व आविकभेदकेसंभवतें औरसेरविलहरा
वकर्कें चपुनः स्वरवेष्टोषलवतें व्यवस्थाके होयताते परमा
र्थतेंतु नहींकहासें चेत् व्यवस्थाएहीकहताहे श्लो० नजागत्त्र
मे स्वप्नकोवासुषुप्तेर्नविश्वोनचातैजसः प्राज्ञकोवा अ
विद्यात्मकत्वात्त्रयाणांतुरीय स्तदेकोवशिष्टः शिवःके
वलोहं ८ ईहांचपुनः लयक्रमकर्कें पूर्वापरकारनेदेख्याहे
सोईकहताहे हमारेमतविषे पदार्थ द्विविधहै एकचपुनः
स्वरूप अन्यथारीयोंकर्कें परिकल्पित पदार्थोंकिईन्होंकेही
अंतर्भावतें नहाइ एक पदार्थ आत्मापरमार्थिक एकसर्व
दाएकरूपहूं अपाधिकभेदकर्कें त्रिविधहै ईप्परलावसा
हीचपुनः इतें ईहांकारणाभूताज्ञानोपाधिईप्पवरहे अं
तःकरणातातसे स्कारावरकें नाज्ञानोपरहितजावहै प्रपंचवि

साक्षी तु सर्वस्यान्तः स्वरूप

विशेष कहो है

बिंब और २

तहैं च पुनः एतत् अर्थः तें अविद्याप्रतिबिंबेश्वर पद विषै
बिंबचैतन्य साक्षी है तु पुनः बिंबेश्वर पद विषै प्रतिबिंब
मुख विषै अनुगत मुखवत् बिंबप्रतिबिंबगत सर्व का अ
नुसंधाता चैतन्य साक्षी ऐसे कहीयत है वार्तिककार मत विषै
तु ईश्वर ही साक्षी है ऐसे द्विविध ही जीवेश्वर भेद करके — प्रतिबिंब का आभास
कहा है तहां ईश्वर हूं त्रिविध है अपना उपाधिभूत अवि
द्या के गुणत्रय भेद करके विष्णु ब्रह्मा रुद्र भेद तें कारणीभू
त सत्वगुणावछिन्न विष्णु पालता है कारणभूत रज उप — पं
हित ब्रह्मा सृजता है हिरण्यगर्भ तु महाभूतें कि कारणत्व के
अभाव तें नहीं ब्रह्मा तो भी स्थूलभूत के स्रष्टत्व तें कहूं एक
ब्रह्मा हूं उपचार तें कहीयत है कारणभूत तम उपहित रुद्र
संहरता है इस प्रकार च पुनः एकही के चतुर्भुज चतुर्मुख पं

चमुखादि पुंसाकार है श्रीभारती भवानी आदि च पुनः स्त्री
आकार है और च पुनः मत्स्यकूर्मादि अनंत अवतार लीला
करके आविर्भाव होते हैं भक्तों के अनुग्रहार्थ ऐसे धारी
यो जीव ह्रै त्रैविध है अपना उपाधि के अवांतर भेद करके
विश्व तैजस प्राज्ञ भेद तें इहां अविद्या अंतःकरण स्थूल
शरीरावच्छिन्न जाग्रतावस्थाभिमानी विश्व है सोई ही
स्थूल शरीराभिमान रहित उपाधिद्वयोपहित स्वप्नावस्था
भिमानी तैजस है सोई ही शरीर अरु अंतःकरणोपाधिद्व
य रहित अंतःकरण संस्कारावच्छिन्न अविद्यामात्रोपहित
सुषुप्तावस्थाभिमानी प्राज्ञ है इन्हों के च पुनः वास्तव स्वतं
त्रोपाधि भेद के अभाव तें स्वतंत्र भेदाभाव संतेहू अवांतरो
पाधि भेद तें एकत्व संतेहू अवांतर भेद व्यवहार करीयत है

तिसअविद्याके व्याप्यरूप होवाते चैतन्यकर

के

तेपुनः साक्षीसर्वानुसंधातासर्वानुगततुरीयाख्यएकरवे
धहीं तहां उपाधिके भेदकरके हूं नहीं कहूं एकभेद तउपा
धिके एकरूपत्वते इनतें पाछे ह्रूपके स्वरूपकूं निरूपण
करते हैं अविद्यातें व्याप्यचैतन्यकार्यात्मक प्रपंच ह्रूपपर
यहि तिसके च पुनः अपरमार्थिकत्वसंते हूं व्यवहारिक
सत्यके अंगीकारतें नस्वाप्निकपदार्थवत् निरूपण व्यर्थ
है उपासनादिकरवे बेउपयोगत्वतें इसते सोहं रवेरवे थहे
अव्याकृत मूर्त मूर्तके भेदतें तहां साभास अविद्या मूर्त मू
र्तप्रपंचबीजभूतत्वरूपा तिसके अजन्यत्वसंते हूं तिनकी
निवृत्तसंते ते वर्तमानत्वक के सो अविद्या व्याप्य चैतन्यो क
सोई जनकहै
के [illegible] अरतत्संबंध अरजीव अर ईश्वर अरविभा
ग अर चिदाभास इन षट् भेद गरभित अनादित्वतें अव्याकृ
अप

बयासो अविद्याय द्यपिजननमृत्युतें र
हित हूं है तद्यपितिन अविद्याकी निवृत्तक

३९ 31

इहांयेन हीकहराग जोजीव कर्मानुष्ठानादिरूप आकाशादि
भूतोतें पूर्वसिद्धअसंभवहैं अविद्याके अनादित्वतें पूर्वापर
भेदके अनंगीकारतें २

तें ऐसे कहीयतहै सोचपुनः आपजउर्ध्वं अजउरचेदाभासकके
उज्वलेनहोई जीवके पूर्वकर्मसंस्कार प्रयुक्त होई शब्दस्पर्श
रूपरसगंधात्मक आकाशवायुतेजजलपृथिव्याख्यारनेपंच
महाभूतोंकूं जनयहै तहां पूर्वपूर्वभूतभावकूं प्राप्त अविद्याके
उत्तरोत्तरकार्यप्रवृत्तिकारणत्वतें पूर्वपूर्वभूतगुणोंके उत्त
रोत्तरभूतोंविषे अनुप्रवेशहै ऐसेहीअविद्यास्वरूपहीअं
धकारस्वरूपहै भावरूपहीआवरणस्वरूपचार्वाकपक्षानवि
रोधी अरु आलोककरनाशप्रयोग्यहीमहाविद्युदादिवत् आ
विरभावर्त्तेराभाववान्है येरसिधांतहै अरु संसारका हेतु है
ऐसेरेहोकेउपादानत्वके अभावतें चपुनः नप्रकृतीयों विषे
सृष्टप्रक्रियापाककेकहीयतहै इसतें अविरोधः तुपुनः दिक्कू
कालअप्रमाणकत्वतें नहीं कहे आकाशके हीदिक्कूं व्यवहा

अब एह कहते हैं जो अविद्यास्वरूप है अरु तिसही
कौं शक्ति है अरु अंधकारादिहैं विक्षेपरूप जो सके ऐ
सी आवरणकार्यों विषे अरु चेतन नहीं आग्रहही आधीन
वरते तो भावरूपतें इसातें प्रकृतीयोंविषे हेतु तिनका अन्य
नहीं कहातें सरिद्कू
कालका ६६

कारणास्थितहोता है कार्य इस न्यायतें भूतगुणपहें
५

रजनकत्वके संभवतें इहां श्रोत्रमेंते प्रथम अपर्यये इहां
अरश्रोत्रआकाशहीहै काल तु पुनः अवेद्यास्वरूपहीहै इति
सहीके सर्वाधारत्वतें इति ये च पुनः अव्याकृतपदार्थ ईश्व
रोपाधिहै १ च पुनः तामें क्या पूर्वमें रूपेत सूक्ष्म अपंचीक
त पंचमहाभूत अमूर्ता रव्यकारणाकेऐक्यतें सत्वरजतमगुणा
त्मक सत्वांशाके प्राधान्यकर्के ज्ञान क्रियाशक्त्यात्मक है एक
स्वरूप है औसे चेतन रूपकूं हीर में लय है ये उत्पत्ति करते हैं इति
सका च पुनः ज्ञानशक्तिके प्रधानांशा अंतःकरण है सो च पुनः
बुद्धि मन औसे द्विविध कहायत है क्रियाशक्तिप्रधानांशाप्राण
है सो च पुनः पंचधा है प्राणापानव्यानोदानसमान औसे औ
से एक एक भूतकर्के ज्ञान अरु क्रियाशक्तिके भेद तें एक एक
प्रतिद्वयद्वय इंद्रिय उत्पत्ति होते हैं आकाशतें श्रोत्र अरु वाचा

अवेद्या
सर्वाधा
र है अद
काल है ते
से है तातें
अवेद्या
स्वरूप है र
पगुण
अरु पंच
भूत अप
वाप चु भूतमि
लो होय

वायुतेंत्वकूअरपाण तेजतें चक्षुअरपादजलतेंरसनाअरअ
पायुपृथ्वीतेंघ्राणअरउपस्थचपुनःइत्ते ईहांचपुनःते
जोमयीवागिरत्तेश्रुतीककेंतैजसीहैवाकूपादत्तुपनःनाभ
सहैऐसेकहतेहैंकेंईएक ग्रहव्यंजकेंउयत्वककैहुपुनःवा
चानभसत्वहैश्रोत्रवत् चपुनःपादस्थिरकेत्साककेचाहुषके
स्वास्थ्यदर्शनितेंचक्षुअरपादकेहोतैजसत्वहैयेतुयुक्तहैरवेचा
रककेंकहाहै तेजोमयत्वश्रुतेतु मनकेपंचभूतकार्यसंते
हैंअन्नमयत्वश्रुतेवत् तदुपकार्यताककेंकहीहै मनकेच
पुनःपंचभूतगुणग्रहणत्वककेंरतेनजैसेजेपद्मयतेंऐसे
न्यायतें इतेन्होंकेअधिष्ठातादेवताहैं ज्ञानशक्तियाशक्तिप्रधा
नहोयेरहेमुक्तिवातइंद्रआदित्यरवेछुवरतारमेवत्रअप्रवना
कुमारप्रजापतेइत्ते तहांज्ञानशक्तिसमष्टिअंतःकरणहै कि

तिसतें सस्पर्शरूप विषय
का ग्राहक इंद्रिय पदार्थ पदारैघूल

[illegible]

याशक्तिं समष्टिज्ञातांहे शब्दस्पर्शरूपरसगंधग्राहक श्रोत्र ग्रहणविनागंध
त्वक् चक्षु रसना घ्राण नाम पंच ज्ञानेंद्रिय हैं त्वक् चक्षु स्वगता कानग्रहणनुप्रत्य
हंगुणवाथ्य इंद्रकूं हूं ग्रहण करते हैं श्रोत्र हं चक्षुर्वत् जा क्षहीहै २
यकके शब्दकूं ग्रहण करते हैं इहविशेषज्ञान है ऐसें प्रतीत तें।
वचनादानगमनविसर्गानंदजनक वाक् पाणि पाद पायू उप
स्थ नामक पंचकर्मेंद्रिय हैं एह सर्वे च पुनः स्मेलक केसपूर्व
ज्ञाकरलेता है ज्ञानशक्ति प्रधानक केरहे रलयगर्भ है एक क्रिया
शक्ति प्रधानकके सूत्र ऐसे कहीयत है ये अमूर्त पदार्थ है
कार्यत्वतें व्यष्टि च पुनः समष्टि जीवोपाधि हीहै तिनकें च पुनः
तथाभूत सूक्ष्म भोगायतन शरीर च पुनः भोग्य विषय रवेना
भोगजनन केकूं अशक्तताकूं करतेहैं जीव कर्म के प्रयुक्तता तैं स्थू
लहोवतात्ताई पंचीकृत होतेहैं तहां च पुनः एक एक पंच भूतके

३३
33

धा होते हैं तिन्होंके विषे च पुनः एक भाग चतुर्था होता है च पुनः
सो चार भाग अपने वृहत् भाग कूं त्याग करके इतर भूत चतुष्
य अर्ध भाग विषे प्रवेश करते हैं इति आपके अर्ध भाग करके
अरु इतरों के अष्टम भाग करके पंचीकरण के मेलता विषे
हूं आधे कथने आकाशादि शब्द का प्रयोग है ईहां त्रिवृतमेकै
कं करवाणीति श्रुतेः त्रिवृत्कुर्वदुपदेशात् इस सूत्र ते ती
नो के ही मेलन प्रतीत ते च पुनः त्रिवृत्करण के ही केई एक
मानते हैं ते खवे पृथक्करण न्याय करके हारने रा करते हैं तैसे
य कहते हैं तैत्तरीय विषे तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सं
भूतः आकाशाद्वायुः इत्यादि श्रुति है तहां शंका विषे तीन
क कै अष्ट के प्रथम विषे हृदय का न होना यह तेज है औसे प्र
थम पदार्थ के धर्म की अपेक्षा करके आकाश वायु के वली पस्त
पदार्थों

एक वेर मेलन प्रकार विषे पंचीकरण
कर कहा है सर्व वेर अवरूप कहता

तें च पुनः छांदोग विषे एक के विज्ञान कर के सर्व के विज्ञान प्रत्ते
सो तातें आकाशादि वायोः अचेतनों के जलकार्यत्व अवरूप वाचत्व
तें तहां पंचों के मेलन विषे हूं अवयुत्यनुवादेन क्या मेलन के पु
नः कथन कर के त्रिवृत्करण उपपन्न है त्रिवृत् ही है ऐसे तु पुनः
तत्कल्पना विषे वाक्यभेद प्रसंग है त्रिवृत् कुं वेत उपदेश्यात्
ऐसे सूत्र चे पुनः अनुवादतें न पंचीकरण सह न्याय के
बाधवे कूं उत्साह करणी है च पुनः शारीरारंभकों विषे मेलन प्र
तीत तें पंचों के प्रवेश ही है पंचीकृत पंचमहाभूतानामिति च पुनः
भाष्यकार वचन है ऐसी तें भलें है इन अनात्माकी त्वें ताक
के ये ए सिद्धांत है च पुनः तें पंचीकृत पंचमहाभूत भूतनाम
मेलन कर के एक कार्य इंद्रियों के आधेयस्थों गायत्न कूं उत्पत्ति

38 34

कहते हैं सोही शरीर कहीयत है तहां सत्वप्रधान देवशरीर हैं रजप्रधान मनुष्यशरीर है तमप्रधान तिर्यगादि स्थावरांत शरीर हैं तिस शरीर पंचभूतते करि विचित्ररूप के हौ कहूं एक भूतोंके न्यूनाधिकभाव नहीं विरोधकूं पावता ऐसे विषय हैं एक एक भूत पंचीकृत जन्य चतुर्दश भुवन नाम ऊर्ध्व मध्य अधोभावक करिके सत्व रज तमों का प्रधान हैं च पुनः घटादिक हैं ॥ एतत्सर्वब्रह्मांडाख्य विराट है ऐसे इस कूं मूर्त ही उपराधिक हीयत है येही है अपलेपरश्मूह का क्रम इनतें विपरीत लयक्रम है पंचीकृत पंचमहाभूत तत्कार्यात्मक विराडाख्य मूर्त पृथिव्यादि एकैक भूतके लय करिके अमूर्त अपंचीकृत पंच महाभूतात्मक हिरण्यगर्भाख्य स्वकारण विषे लय होते हैं सोई एह

गर्भा त्म

पृथ्वी जलमें
जल अग्निमें
अग्नि वायुमें
वायु आकाशमें
आकाश आत्मामे लय होता है

रैनंदिनप्रलयहै।चपुनः अमूर्ती अव्याकृतपरमेश्वरोपाधि
विषेलयहोवेहै अव्याकृतकेतुपुनः अनादित्वकर्केहीका
रणाकेअभावतैंनहीलय स्वकारणाँसूस्वरूपकर्केअव विषे
स्थानलयहैइसतैं नष्टहरगात् येहैअव्याकृतलय तुपुनः
ब्रह्मज्ञानतैंजोउछेदहैसोआत्यंतिकप्रलयहै सोचपुनःका कारणकही
रणाकेक्रमकर्केहीकारणकेउछेदतैंज्ञानाज्ञातैंहीकार्य येकारणामा
उछेदतैं सकलप्रपंचप्रलयादिकरूपप्रपंचप्रलयभाव नंतिसतैंजैसे
तेअपारमार्थिकसंतेवासनाकेशादितैंव्यवहारकूंक्रमहै संपूर्णकार्य
इतै मायिकत्वसंतेहूंनतुहुप्रसंगहै जैसेचपुनःएहहैतैसेक उत्पत्तिहोया
हाहैआकरगंथविषे इसप्रकारस्थितविषेजागतशाहिव्याव केपरतैसका
स्थाकहीयतहै इंद्रियवृत्तेंकौलीनंअर्थोकाउपलंभजागण रणाकेअभा
समयविषे कालेर वतैंकार्यका
नाशहै ५

35

नुभवजैसे॥ स्वप्नका योगीपुरुषके
इस्थितेकालविषेप्रलयकालके अ
भोग्य अभवजैसे२

है तहांचपुनः मूर्त्तविराडरूपहै प्रत्यक्षादिप्रमाणषट्कके
व्यवहियमाणत्वतें सो व्यवहारै है स्वप्ननामजीवक
केउपभुज्यमानहै तिसकेचपुनः देहेंद्रियादिकोंविषेप्रवे
शतें व्यापनाका स्वप्नऐसे कहीयतहै स्वप्नप्रवेशानविषे
विष्णु व्याप्तौ चपुनः व्यापनविषे ऐसे धातुकहाहै ईहांचपु
नः पंचापिस्वप्नने अमूर्त्तचपुनः अव्याकृतकूं अनुमाना
दिकोंकके अनुभवकरीयतहै तोभी सर्वव्यावहारिककूंवे
हीं स्वप्ननेंजानीयतहैइतिचपुनः स्नेयमतें तिसकेस्थूलशरीर
नेरोपाध्यभिमानित्वतें चपुनः नरतिसके अवस्थांतरव्यापक
त्वहै प्रत्युतिरजतादिज्ञानोंके अप्रमाणिकत्वतें तद्विषयके अ
व्यवहारिकत्वसंततेहूंइंद्रियव्यापारकालीनत्वतें जागरणविषे
तिसज्ञानकेविषयके
२

उपपन्न है जीवनोत्पत्तिप्रक्रियायां अधः तेकहीहीहै ऐसेजागन्नाभोग
जनकहृदयसंतेस[illegible]भोगजनककर्मकेचपुनः उदयसंतेस्वे
दास्यान्नामस्तवृत्तिककेस्थूलारंभमानकेदूरीकृतसंतेसुर्वोइंद्रियो
विषेअनुग्राहकदेवत्योंकेअभावतेनिर्व्यापारताककेलीनसंते
विषवहलानऐसेकहीयतहै तबचपुनः स्वाप्नावस्थाहै तहां
चपुनः अंतःकरणगतवासनाकीआकारताककेइंद्रियवृत्ति
केअभावकालविषेअर्थोंकीउपलंभस्वप्नहै तहांमनहीं
गजतुरंगादिकआकारककेपरिणामकूंपावताहै अविद्यावृत्तिकके
चपुनः जानीयतहै ऐसेकेईएककहतेहैं अविद्याहीसुरक्तिरजता
दिवत्स्वप्नार्थाकारककेपरिणामकूंपावैहैजानीयतहै अवि
द्यावृत्तिऐसेएकपक्षहै तहांकौनपक्षश्रेष्ठहैइसअपेक्षाविषेउत्तर
पक्षश्रेयहै अविद्याकेहांसर्वत्रअर्थाध्यासज्ञानाध्यासके

इहां ये भाव है जब बाह्य इंद्रिय वृत्ति होती है तब मनो वृत्ति पदार्थां के देश कर के आभास
द्वारा पदार्थाकार सो इहां बाह्य इंद्रिय वृत्ति के अभाव सें तें पदार्थ का मैं न परिणाम क
रन ही होता है और सो ही अध्यास रवि ना सो माह कहें नहीं २ होइ है
उपादानत्व तें कल्पितत्व तें च पुनः मनोगत वासना के अनेक मैं तत्
त्व कके कहूं एक मन परिणामत्व व्यवहार तें ननु तब मन के
हस्त्यादि आकार परिणाम अंगीकार विषे दृष्टत्व के संभव कर के आ
त्मा स्वयं ज्योति विषे असिद्ध है इति चेत् न बाह्य इंद्रिय वृत्ति के अ
भाव कर के तब मन के ग्राहकत्व तें तिस के सहकार कवे हीं
तिस के ग्राहकत्व के नियम तें स्ववृत्ति कांतःकरणावच्छिन्न
ही चैतन्य के प्रमातृत्व के नियम तें तब अंतःकरण के सत्व सें
तो हूं प्रमातृत्व का अभाव है स्वप्नाध्यास का कौन अधिष्ठान है
इस विषे कहते हैं मनोवच्छिन्न जीव चैतन्य है औ से एक कहते हैं
मूलाज्ञानावच्छिन्न ब्रह्म चैतन्य है औ से और कहते हैं कौन पक्ष
यहे मताभेद न कवे उभय पक्ष हैं तैसे कहते हैं जाग्रद्बोधक
के स्वप्न भ्रम निवर्त्तक अंगीकार तें च पुनः अधिष्ठान ज्ञान
सें वाधिष्ठान ब्रह्म के ज्ञान सें तें स्वप्न
के विद्यमान सें तें स्वप्न के भ्रमत्व
निवृत्ति होवे है तातें स्वप्नाध्यास
[illegible]

स्वप्न विषे व्यवहारिक संघा- तेभान जो है तिस स्वप्न का विरोधी है तिसका अभाव है अर्थ प्रतीत...

= केवल चैतन्य के स्वप्न अधिष्ठानत्व अंगीकार से तें जाग्रत आदि विषे
तिस केवल के ज्ञान के अभाव तें स्वप्न की निवृत्ति कदाचित् न होवेगी

तें ही भ्रम की निवृत्ति तें = केवल चैतन्य के च पुनः अधिष्ठानत्व से तें स-
सार आदि अगार विषे तिसके ज्ञान के अभाव तें वासना से तें सर्व द्वैत
की निवृत्ति तें न जाग्रत बोध तें स्वप्न निवृत्त होवे सो है करें ते च पु-
नः ऐसे जीव के कर्तृत्व प्रवृत्ति है आकाश आदि सर्व प्रपंच वत् स-
र्वसाधारण्य की आपत्ति तें च पुनः न मूलाज्ञानावच्छिन्न ब्रह्म
चैतन्य अधिष्ठान है ननु जीव चैतन्य के अनावृतत्व कर के सर्व
द्रष्टा समानत्व तें ऐसे अधिष्ठानत्व है सत्य है तहां भी स्वप्न अध्या-
सानुकूल व्यवहारिक संघात भान ... विरोधी अवस्था ज्ञान के
अंगीकार तें ननु व्यवहारिक संघात मान विरोधी अवस्था ज्ञा-
न कल्पन विषे = ऐसे व्यवहारिक मनुष्य आदि संघात मान है तेथो-
ह स्वप्न अगार विषे च पुनः अहं मनुष्य आदि प्रतीतक संघातांतर भा-
न के अंगीकार तें आख्यार विषे स्वप्न विषे किं वा सो च तहां ऐसे न्याय

जाग्रत विषे है तें सर्व तहां स्वप्न है वे ज्ञान से तें सर्व द्वैत की निवृत्त होवे जे ऐसे होवे तब जाग्रत बोध तें स्वप्न की निवृत्त न होवे तें सत्य कुछ तें है ...

= अधिष्ठानत्व तिस केवल का ही है और स्वप्न के अज्ञान नाम कर कथन

क्या जीव चैतन्य अनावृत ही है यद्यपि वर्तं है ६

37

३७ स्वप्न

तब अन्य अवस्थांतर की कल्पना करके बाधक ज्ञान होता है ४ स्वप्न मिथ्या है ५

वर्तमान च पुनः सामग्री के अभाव तुल्य जैसे ननु अहं मनुष्य इत्यादि व्यवहारिक संघात ज्ञान के प्रमाता जन्यत्व तैं कैसे अज्ञान रहने वर्तकता है अवस्थांतर की अन्यथा अनुपपत्ति करके निकल्पन संतैं सुषुप्ति विषे हूं स्वप्न बाधिक ज्ञानधारी त्यैं सो च पुनः अलिप्त है जाग्रत की आपत्ति तैं इति चेत् नहीं ये रखे रोध स्वप्ना वस्था अज्ञान औ स्वप्ने अंतःकरण लय सरहेत के सुषुप्ति रूपना तैं न तहां तिस का बाध है जाग्रत विषे तु रमै यथा ही स्वप्न भासता है इत्यनुभव तैं अहं औस ज्ञान के प्रमाता जन्यत्व संतैं हूं यथार्थ त्व तैं च पुनः शरीर आरत आदि ज्ञान के प्रमाता जन्यत्व तैं अवस्था अज्ञान विषे रोधित्व अनुभव सिद्ध है ख्वे जो बाध ज्ञान तु पुनः प्रमाता जन्य वृत्ति बिना और करके नहीं रहने वर्त होता सो ही के च पुनः अत्वे विद्या रने वर्तकी का अभाव है अखे या के साधक त्व करके ही धर्मी

अर्थापत्ति कूं अंगीकार कूं करि कहता है २

जो कहो सो ही अज्ञान रहने वर्त कैसे तु २ है

जैसा जाग्रत् के स्वप्न ॥ जितने व्यवहारिक पदार्थों ज्ञान हैं तिन्हों के निवर्तक ज्ञान भी तितने
ग्राहक मान लिये हैं क्या अज्ञान को साक्षी है ये प्रमाण प्रवृत्त पावह है औ है अज्ञान हुए
सेन कछु अवद्य है २ जितने ज्ञान हैं तितने अज्ञान हैं औसे च पुनः कहीं है १
अंगीकार तें शुक्ति ज्ञान कर के जैसे व्यवहारिक संघात ज्ञान करके
अज्ञान निवर्त्त होते हैं पुनः हूं कदाचित् रजत भ्रम वत् न स्वप्नाध्या
स अनुपपन्न है इससे जीव चैतन्य ही अधिष्ठान है इस पक्ष विषे
नहीं कोई हूं दोष जब पुनः ब्रह्मज्ञान तें ही अज्ञान निवृत्ति को
अंगीकार है तब रज्जु विषे दंड के भ्रम करके सर्प भ्रम ते रोधान
वत् अधिष्ठान ज्ञान के अभाव से तें हूं जाग्रत् भ्रम कर के स्वप्न भ्र
म कार ते रोभाव उपपन्न है ब्रह्म चैतन्य ही स्वप्नाध्यास का उपादा
न है इस पक्ष विषे हूं न कोई दोष है जीव जीव प्रति स्वप्नाध्यास
असाधारण मनोगत वासनाओं के असाधारणत्व तें ही है
मनोवृत्ति न ब्रह्म चैतन्य ही अधिष्ठान है इन पक्ष विषे हूं अव

मैंहंगजहैइदोनोंकेएकाधे
मत्तेकर ३

१ स्यान्अज्ञानकेआवरकत्वअंगीकारतैंनहींकाईहूं अनुपपत्ते
इसातैं हीज्ञानसौरविबेकहूं कैसेकहूं कैसेतैसेकथनतें ननु
मनोवच्छिन्नचैतन्यकेअधिष्टानत्वसेंतें अहंगज: ऐसेअहं
कारकेसमानाधिकरणयककेंहीप्रतीतिहोवे इदंरजतं ऐसे
पुरुकेसमानाधिकरणयककेंरजतप्रतीतिवत् ननुपुन: यं
गजहै ऐसीप्रतीतिहोवे ब्रह्मचैतन्यकेअधिष्टानत्वपक्ष
विषे विषे हंगजइत्याकारहीप्रतीतिहोवे ननुपुन: यंगजहैइ
त्ति नहींहूं इदमाकारास्फुरीभूतबाह्यार्थभावकेसमा
नत्वतैं इत्तिचेतन आदिपक्षविषेअहंकारकेपुरुक्तिवत्अ
धिष्टानावच्छेदकत्वतेंपुरुकरजतहै इत्तिवत् अहंगज: ऐसेन
ओंकारप्रसंगहै अहंऐसेज्ञानकेअयंपुरुक्तिहै ऐसेज्ञान
अमप्रसंग विरोधतैं चपुन: इदमंशकेअमाकारअविरोध

अहंज्ञानकेउपस्थत्वतेंअयंस पुरुक्तिआपकेअ
चनहीप्रसंग आपपुरुककेअ धिष्टानजनावेहै
पकेअधिष्टानहीनेकारभ्रमसा इसातेंअमा
कारहवे है ४

हीभासतीहै
नबाह्यपदा
र्थसतीहै १

अ टं १ अ यं २

ब्रह्मचैतन्य अधिष्ठान है ऐसे हूं इसपक्षविषे ब्रह्मको गज इत्याकार प्रतीतिसंतें
गजके बाधसेंतें इत्याकारके हूं बाधतें शून्यप्रसंग होता है ऐसे कहें तो तहां कहते हैं २

हीहै तहां भानके अंगीकारतें क्या अधिष्ठानगत इदमंशआश्रमविषे
हूं भानहै स्वप्नविषे तु गज इत्याकारवत् अयं इत्याकार हूं कल्पि
तहीहै उभयाकारके बाधसेंतें हूं अधिष्ठानभूत चैतन्यके अ
बाधतें नशून्यवारप्रसंग है जौगत शुक्तिविषे हूं शुक्ति इदंकार
तेंरवेलेहूं प्रातीतिकके ही रजतें इदंकारके भानके अंगीकार
तें च पुनः भ्रमोविषे अध्यस्त ही निष्प्रपंचकके प्रकत्र्किके फुरे
है इतते ऐसे न्यायतें शुक्तिका इदमंशभानहै इसपक्षविषे हूं
न इदमंशका सत्यत्व अध्यासविषे प्रयोजक है रकिंतु अधिष्ठानका
सत्यत्वहै तहां च पुनः अधिष्ठान अज्ञात शुक्ति चैतन्य ही है ईहां
हूं साक्षी चैतन्य विद्यमान है रनिष्प्रपंचक ऐसे उपाहित है रते
सीतें पक्षद्वयविषे ही न काई ही अनुपपत्ति है ईहां च पुनः स्वार्थ
कपरार्थ भोक्ता तैजस ऐसे कहायत है रचित्ताख्य है तैज प्रधा

ब्रह्मचैतन्य अधिष्ठान नाहि बे हूं शुक्ति इदं अंत कुं स्मरण करते हैं

अध्यासका अधिष्ठान नहीं ५

रचित्तके प्रधानतें

३९

31

नैतें आदित्यादि ज्योतके अभावक केहीं भासकत्वतें इत्तैवा इ
सप्रकार जाग्रत स्वप्न भोगद्वयकके ओते जीवके उभय कार
णकर्म किद्ध यसेते अस्मान ग्रातप वरछित्र जीवके सवासन अं
तःकरणके कारणात्माकके अवस्थानसेतें विश्राम स्था
न सुषुप्ता अवस्थाकारणमात्र उपलंभ सुषुप्त है तहां जाग्रत
स्वप्न भोगप पदार्थके अभाव खेबहु साक्षात्कार सुखाकार अ
वस्था अज्ञानाकार च पुनः अविद्यावृत्ते च यअंगीकार हैं अहं
कारके अभावतें च पुनः नएक विरोधिवृत्ते है क्यामें हों नअैसो
अनुभव है सुषुप्ताभाव प्रसंगातें वृत्तिके रूपके उपलंभतें न
प्रलयकी अत्तिव्याप्ती है तहां प्रलय विषे कल्पना बीजके अभा
वतें ईहां च पुनः सुखमहं स्वाप्सं न किंचिदवेदिषं इस कल्पना
है सुषुप्तोत्पनके परामर्शतें अननुभव सितें परामर्शकी

कावीय

प्रलय अरु सुषुप्ति दोनो विषे यद्यपि वृत्तिके स्वरूप का
अभाव है तथापि सुषुप्त विषे प्रलयकी अतिव्याप्ती नही

सुषुप्ति विषे अहंकार लीन तौ न कहा ऐसो भाव क्या न कहिं
रूप हुता मन न हो तिस के अरु चिरवेरवं इस के उलेख के अ क्या अज्ञान न हां अनुभूत
भव कहु न हो ता मरी तिस के स्मरण के होता मरितिसे उ भाव सत्ते २ स्वरूप नहीं य
पुनः अनुपपन्न ते अन्तःकरण उपराग कालीन अनुभव जन्य
त्वके च पुनः अभाव तें तत्तोलेख्य भाव सत्ते हं स्मरणत्वकी
न अनुपपन्न है स्मरण विषे तत्तोलेख नियम के अभाव तें च पुनः
जाग्रत दृष्टि विषे अस्वाप समिति अनुभव के अभाव तें च पुनः लिं
ग के अभाव क के आश्रयासिद्ध क के च पुनः अनुमान के अस
भवतें अहंकार कूं तु पुनः ध्यान समय विषे ही अनुभव की
है सुषुप्ति विषे लीनत्व क के तिस के अननुभूतत्व तें स्मरण के
अनुपपत्ति तें सुखप्रतीति विषे आश्रयदर्पण विषे जपा कुसुम
लौहित्याध्यास सं तेरकहै सुख प्रतीति वे तु अहंकाराश्रय
ताक के साक्षी चैतन्य के स्मरण ताश्रयत्व तें अहं अस्वाप्सम्इति
समानाधिकरणप्रतीति है च पुनः अहं सुखी इत्ते वत् आश्र
यता क के स्मृति संशयविपर्ययो के साक्षी चैतन्याश्रयत्व नियम तें
जैसी तें जागत अवस्था विषे अहंकार पुरुष का आश्रयसा ही है स्मरण
हृदर्पण वत् समानाधिकरण समता कर्के
ऐसी जैसे समानाधिकरणपक्के स्मरण की प्रतीति है सो ही कोरहे

जो गत्काल विषे २

जे कोई कहे न कि चिरवेरवं अनुभव का स्मरण न हो क्या अनुमान कर तिस का ज्ञान तू वेषे माने है सो न हो लिंग के अ सी भाव क के अर आश्रय की असिद्ध के के आश्रय का असिद्ध कहिये ऐसे समानार थे रहु ग्राधक

जै ष है जै ष है

40

स इच्छाधीन
त्वते ७

निस प्रमात्वक ज्ञानकी कार्यता
कहीये व्यावहारिकपदार्थकि यथार्थ
अवछेदते २

तहां कहीये भ्रमज्ञानविषे अंतःकरण
वृत्तिजो प्रमाजनक सामग्रीतें संभव
तेहै ५

चपुनः अहंकारके प्रमाणजन्य ज्ञानके आश्रयत्वतें प्रमात्वधर्म के
हीतत्कार्यताअवछेदतें अप्रमात्व अवछेदनकके चपुनः अवि
द्याकके [illegible]केहीकारणत्वतें इसीतें हीअनाप्रचायपरि
जन्यपनैहै परोक्ष विभ्रमहू अयेथावृत्तेहीहै औसे अंगीकारहै
वेदांतवेत्त्यांके तैहां अंतःकरणवृत्तिजनकसामग्रीके संभव
सेतेहू प्रमात्वाभाव अपराधक वे अंतःकरणके असामर्थ्य
तें नामारदिकोविषे भ्रमाध्यासहु पुनः इच्छाधीनताकके भ्रमप्र
मातें खेलरूपतामें मनोवृत्तेहीहैं कामारदिवत् सो कहाहै इसीतें
हीचोदनाजन्यत्वतें मानसी क्रियाहीहै सो न ज्ञानहै इतते इनक
केतर्ककेहू मनोवृतित्व व्याख्यानहै व्याप्यके आरोपणकर्के
व्यापकका प्रसंजनात्मक [illegible]स तर्कके इच्छाधीनताकके भ्रमप्र
माके खेलरूपणत्वतें इसीतेंही मननानेरि ध्यासन सहितपूर्व

मन कहीये जो प्रमा और
भ्रमतें खेलरूपणकूं सिद्ध
करे ५

तासव्यहीं वेदांतवाक्यविचारसैं ते श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो
इत्यादिरवि विधिबतावती है ऐसे सवेदांतवाक्यविचार का चतुर्विधि अन्व
यव्यतिरेक है तर्करूपत्वतें दृग्दृश्यान्वयव्यतिरेक साक्षीसाक्ष्य
अन्वयव्यतिरेक आगमापायि अरु तदवधि अन्वयव्यतिरेक दुः
खी अरु परमप्रेमास्पदान्वयव्यतिरेक अनुवृत्तव्यावृत्तान्वयव्य ऐसे
तिरेकरूप पंचम है इहु सर्व वेदांतानुकूलतर्कों अरु चतुर्लिंगन
मीमांसा के केप्रवृत्ति पारिदिनों के उपलक्षण है ऐसे ज्ञानी कह
ते हैं समन्वय १ अविरोध २ साधन ३ साध्य ४ ये मीमांसा करिपित
चतुर्लक्षण हैं विस्तार तु पुनः वेदांतकल्पलतिका विषे अनुसंधे
य है सो ॥ सुषुप्तिअवस्था विषे है आनंदभोग तज्ञोक्ता च पुनः
सुषुप्ति अभिमानी प्राज्ञ ऐसे कहीयत है पूर्वश्लोक के अस तत्वतें
तब विक्षेपावरण दोऊ क्या भेद सिद्धकर्ता के अभाव करके अथवा प्र
के अभाव करके

[illegible]

६१
41

जीवके संस्कारकी निमित्तककै ... साक्षी आश्रि
तकार्योपादानकोटर ... विषे जीवके ...
अपूर्वेन्तु ...

कृष्णस तत्वते न बन्धं अंतःकरणकेलयसंतेहू तिसके संस्कार
केसे बंधतें न जीवाभावप्रसंग है नवा सर्वसापत्तो है चपुनः
ईश्वराभेदप्रतिपादन द्वारा रेखे यावद्भिमान रहितत्वककै
उपचारते है चपुनः संस्कारके नैमित्तकारणत्वककै साक्षा
श्रितकार्योपादानकोटरविषे क्यास्थानरविषे अपूर्वेन्तु ते न
तिसके भेदसंते हूं साक्षीका भेद है तुपुनः जाग्रद्विषे अंतःकर
णके प्रमात्र आश्रितकार्योपादानकोटरविषे पूर्वेन्तुते तिसके
भेदककै प्रमातृका भेद ही है चपुनः अधिकोपाधिवेन्तु साक्षा
सा
हीके प्रमातृत्वते न प्रतिसंधानकी अनुपपत्ति है इति प्र०॥ मा
तृमान प्रभेदे ऽपि प्रतिदेहं न भेद्यते साक्षी बाह्यार्थवद्यस्मा त्स
आत्मेत्युच्यते ततः १ अभिचाराभिधो पद० स्प्रमात्रादिः स्वसा
क्षिकः सर्वमात्राद्यभावार्थ साक्षित्वात्तन्नथात्मनर इतिवार्ति
व्यभिचारी मिलै हो जैसे बाह्यार्थोंके भेद
ते जैसे प्रमात्रादि आप ककै नेत्र भेदक नहीं
के साक्षी भा ...
नहीं सर्व प्रमात्रादि अर्थके अभावके ... पावना ...
...

संकार्या
ख्रिया

दुःखसामिग्रीके विरह करके दुःखके अभा
वजैसे सुखसामिग्रीके विरह करके सुखका हू
अभाव होवे इसीते न आह ५

ककारपाईः व्यवहारदशाविषेहूं साक्षीके भेद न होनेका कारण
तेंस षुप्तविषे सोभेद कल्पन किन्होंके व्यामोहमात्र है अैसे
धारीयो ननुदुःखी मैं सोवत भया अैसे किसीके कदाचित
परामर्श तें सुषुप्तविषे दुःखानुभवहूं है न तब दुःखसामि
ग्रीके विरह करके तिसके अभावतें च पुनः सुखके आत्मस्व
रूपत्वतें र नित्यपत्वतें शय्यादिकोंके अकोमलत्व करके दुःखी अै
से उपचारतें मैं दुःखी मैं सोवत भया इस प्रत्ययकी उपपत्ति है
अथवा अवस्थात्रयके ही तीन विध्याभीकार तें सुषुप्तविषे हूं
दुःखवर्णना है तैसे कहते हैं प्रमासानजाग्रतविषे जाग्रत है
स्फुरण ताहि भ्रम जाग्रत स्वप्न है प्रमादिकके सुधी
भाव जाग्रत्सुषुप्तिहै अैसे स्वप्नविषे मैं चारदेकी प्राप्ति
स्वप्नजाग्रत है स्वप्नविषेहूं स्वप्नमें देख्या है अैसी बुद्धि स्वप्न
समसलो हत

[illegible]

है

॥ सुषुप्तविवेकसंस्कारविवि

स्वप्न है जाग्रत् स्वप्नविषे कहिबेकूं न समर्थ होवे च पुनः स्वप्नाव
स्थाविषे कछु एक अनुभव करीयत है सो स्वप्नविषे सुषुप्त
है औ सुषुप्तावस्थाविषे हूं सात्विकी जो सुखाकार वृत्ति है
सो सुषुप्त जाग्रत् है तैसें तैं पीछें सुखी मैं सोवत भया एह प
रामर्श है तहां ही जो राजसी वृत्ति है सो सुषुप्तविषे स्वप्न है
तैसें तैं पीछें दुःखी मैं सोवत भया ये परामर्श की उपपत्ति है २
तहां ही जो तामसी वृत्ति है सो सुषुप्तविषे सुषुप्त है तैसें तैं पी
छें गाढ मूढ मैं होंय ये परामर्श है जैसें ये च पुनः है तैसें वार्त्ति
क अरु वार्त्तिकामृत विषे स्पष्ट है इस प्रकार अध्यात्म विश्व है
अधिभूत विराट् है अधिदैव विष्णु है अध्यात्म जाग्रत है अधि
दैव पालन है अधिभूत संहर्त्ता है इस प्रकार अध्यात्म तैजस
है अधिभूत हिरण्यगर्भ है अधिदैव ब्रह्मा है अध्यात्म स्वप्न है अ

स.

धिदैवँष्टहै अधिभूतरजोगुणहै इसप्रकार अध्यात्मप्राज्ञहै अ
धिभूत अव्याकृतहै अधिदैवरुद्रहै अध्यात्मसुषुप्तहै अधिदै
वप्रलयहै अधिभूततमोगुणहै ऐसे अध्यात्माधिभूताधिदैवो
केएकत्वतें अवयवत्रयसहित प्राज्ञकउपहित इन्होंकेऐक्यो
पासनाकरिकें हिरण्यगर्भलोककीप्राप्तिहै चपुनः अंतःकरणापु
हद्वारा क्रमसुक्तिहै एतत्सर्वोपाधिनिराकरणाकरिकें साक्षीचै
तन्यमात्रज्ञानकरिकेंतुसाक्षात्दैवमोक्षहै इति सो ऐसे [illegible]तीनो
हीअवस्थात्रयसहित विश्वतैजसप्राज्ञोंके अविद्यात्मकत्व
तैंतुच्छत्वकरिकें मिथ्यात्वतें अनुपहितहै केवलहै ऐसासाक्षी
तुरीयारव्य अहमस्मि इत्यर्थः ऐसे व्यवहारतें सर्वव्यवस्था
कीउपपत्तिहै परमार्थतें रकिसीहूं व्यवस्था[illegible]के अभावतें नका
ईहूं अनुपपत्तहै विस्तारकरिकें हांसोप्रपंचितहै मोनेवेदांतक
है

९३ 43

स्फुरत्तिकारविषे ऐसे उपरमहूआ यो ८ ननु जाग्रत्स्वप्नसुषु
प्तिसहितोंनानोंहीं अभिमानी योंके मिथ्यात्वतें तिन्होंकेसा
क्षीकेहूं मिथ्यात्वहोवे अभेदत्वतें इत्याशंकाकरि भेदकेकथनक
केसाक्षीकेसत्यत्वकूं कहताहै श्लोक अपिव्यापकत्वाद्धितत्वप्र
योगात् स्वतः सिद्धभावादनन्याश्रयत्वात् जगत्तुच्छमेतत्समस्तं
तदन्यत् तदेकोवशिष्टः शिवः केवलोहं ९ न हेतुदृष्टांतपूर्वक[illegible]
तिसाक्षीकेंप्रकरणअतोन्यदार्त्तमित्यादिश्रुतेः साक्षीतें अन्य
हैसोसर्वजगत्तुच्छहै ननु साक्षी बाधकी अवधित्वतें भ्रम
की अधिष्ठानताकरिके च पुनः ज्ञातत्वतें न बाध[illegible]काभावतें
के चपुनः नबाधककाभावतें च पुनः इत्यादि अनुक्तसमुच्चयार्थ
अपिशब्द है अथ यदल्पं तन्मर्त्यं इतिश्रुतेः परिच्छिन्नत्वतुच्छ
त्वयोंके सम व्याप्तितें परिच्छिन्नत्वकीनिवृत्तककेतुच्छत्व
के अर

कीनिवृत्ती है एही कहतां है व्यापकत्वादित्ति सर्वं खल्विदं ब्रह्म ॥ सर्वा
त्मत्वोपदेश आकाशादि आकाल के अपरिछेद्यत्वतें आकाशादिकों के
च पुनः देश काल के परिछिन्नत्व से तें हूं आपेक्षक महत्व करके
व्यापकत्व उपचार तें है ननु सर्वव्यापकत्व करके नित्यत्व तें च पु
नः भावरूप है तें आत्मा न दुःख निवृत्ति रूप है न ही सुखरूप है॥
सुख के अनित्यत्व करके नित्यात्म स्वरूपत्व की अनुपपत्ति है तैसे
च पुनः आत्मस्वरूप ॥ मोक्ष अपुरुषार्थ ही है इत्याशंक्य नेत्याह
रहितत्व प्रयोगादित्ति रहितत्व पुरुषार्थत्व है सो एह प्रेय है पुत्रतें प्रे
य है वित्ततें प्रेय है अन्य हमोतें सर्व हमो के अंतर है जो ये आत्मा
इत्ति जो निष्प्रपंच करके भूमा है सो सुख है एह ही परमानंद है
विज्ञानमानंदं ब्रह्मेत्यादि श्रुतीयों करके तिस के परमानंदरूप

अज्ञानककैव्यवहृत

त्वउपदेशातें इतिसके चपुनः इनेत्यत्वसेंतेहूं लोकविषे धर्म
जन्यत्वशब्दतेः करता वृत्तिकी व्यंगता ककैं क्या उत्पत्ति बिना
शाककें इतिसके उत्पत्तिविना आउपचारतें अज्ञानावर्ण
इतिस अप्राप्तके हंं ज्ञानमात्रतें आविद्यानिवृत्तिकके प्राप्त
हीहोती है औसेतउदेशाकके मुमुक्षुके प्रवृत्त्युपपन्न है अध्य
स्तप्रपंच दुःखरूपके अधिष्ठानत्वतें सोईही अभाव है दुःखा
भावरूपत्वककेहूं इतिसके पुरुषार्थता है ननुमोक्षविषे सु
खसंवेद्यहै नवा नहीं आद्य तब रहें इंद्रियादिके अभावकर्कै
इतिसके ज्ञापकके अभावतें व्यंजकके अभावसेंतेहूं इतिस
संवेदनके अंगीकारसेंतेसंसार इवमोक्षविषेहूं तैसे प्रसंग
तें न इष्ट है अपुरुषार्थत्वकी आपत्तितें तिस ज्ञायमानकेही

है २

परमपुरुषार्थत्वतैं इसीतैं ही शर्करा और त्रिसभोग्यताके ही जैसे
ऐसे वैदमंत्रमनुष्योंके उच्चारं क्याकथन है। इतिचेन्नेत्याह
स्वतःसिद्धभावादिति स्वप्रकाशज्ञानरूपत्वतैं इत्यर्थः यद्य
पिसंसारदशाविषे अविद्याकृत स्वरूपत्वतैं आत्मापर
मानंदरूपताकरिकै नहीं प्रतीत होता तोहू तत्वविद्याकरिकै
अविद्यानिवृत्ति भयेतैं स्वप्रकाशताकरिकै आपहीं परमानंद
रूपकरिकै प्रकाशता है ऐसे नहीं ज्ञापककी अपेक्षा ननु सु
खके स्वप्रकाशज्ञानरूपत्व संतैंहूं न आत्मरूपता है ज्ञान
के धात्वार्थरूपताकरिकै क्रियात्वकरिकै साध्यत्वतैं जो आ
त्मि ऐसे प्रतीतितैं ज्ञान मैं हों ऐसे अप्रतीतितैं च पुनः तैसेंस
तैं च पुनः कैसे अधैतवाद है इति आशंकाकरिकै ऐसे कहते हैं अ
नेन्यापेक्षत्वादिति यः साक्षादपरोक्षं ब्रह्म य आत्मा सर्वा

तरः सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म रवेज्ञानमानंदंब्रह्मेत्यादिश्रुतेः स्वप्रका
शज्ञानानंदरूपहीआत्मा अंतःकरणकेतादात्म्याध्यासकै
केंचपुनःतद्वृत्तिविशेषज्ञानेंध्यासतेंजानात्मिंऐसेतदाप्र
यत्वप्रतीतहे धात्वर्थकेउत्पत्तिरवेनाज्ञात्व अंतःकरणवृत्ति
तेंहोहे ऐसेजगत्यिरूपसुखज्ञानकेसर्वाधिष्ठानत्वकर्कै अन्या
श्रयत्वकेअभावतेंनहेतापत्तीहै रतेनकर्कैज्ञानसुखात्मक
आत्मासत्यहे चपुनःतद्भिन्नसर्वजगतस्सत्यहेइतिरसिद्धं ४
ननुसर्वजगत्केतुच्छत्वकर्कैतिसकेनिषेधकर्कैआत्मतत्वकी
प्रतिपत्तिनहोवे जैसीतैंआगाविशारा [illegible] नहींनिषेधहो
ताकछुवुरमित्तकहे [illegible] निषेधहोताऐसेन्यायतें तैसेंसेतौच
पुनःनिषेधकीअनुपपत्तिकर्कैजगत्केतुच्छत्वहेइतिमन्मै
सेकहतेहैं | श्लोक नचैकंतदन्यद्द्वितीयंकुतःस्यात् नवाकेवल

त्वं न चाकेवलत्वं न पूर्णत्वं न चापूर्णत्वमद्वैतकत्वात्कथं सर्ववे
दांत सिद्धं भवेदिमे १० एकत्वसंख्यायोगी एक है तद्रूपेहाबु
द्धिलन्यद्वितसंख्यायोगी द्वितीय है तिसीतें एकके अभावसं
ते द्वितीयं कुतः स्यात् द्वितीयतृतीयादिकोंका हूं उपलक्षण
है ननु एकमेवाद्वितीयमिति इन श्रुतिकर्कें एकत्व प्रतिपाद क्या एकत्व
न करायत है नहीं ये कहते हैं न वा केवलत्वं इतिसएकत्वके अ
विद्यकत्वते जे आत्माके एकत्वकूं श्रुती नहीं प्रतिपादन कर
ती तब पूर्णत्वइत्यादिक प्रमाणके वचनतें अनेकत्व ऐसे होवे इति
चेत् न ऐसे कहते हैं न चाकेवलत्वमिति अकेवलअनेकत्वहै
नेह नानास्ति किंचन एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म न्यायात आदि
श्रुतिनेतिनेति इत्यादि श्रुतिकर्कें तब सर्वकि प्रतिषेधतें पू
र्णही ऐसे होवे इति न ऐसे कहते हैं न पूर्णत्वमिति अस्तु
जैसे

86 जेकहैं

46

कहे१ क्यादोनों ... नाहें ...

क्याजेअसतकूं जानता हैतोवहअसत्नहीं१

सोहोतानैं। असत्है वतत्व असे जे जानताहैं हैत्वत्व असे सो जानताहैं इनविद्यमानकूं तैसतें जानताहैं असे सत्यज्ञा नमनंतंब्रह्म सदेवसोम्येदमग्रआसीत् असे उपक्रमकूं क रि एहसर्वएहआत्माहे सोसत्यहै सोआत्माहै तत्त्वमसीत्या दिश्रुतीककेंसत्यत्वप्रतिपादनतें सर्वभ्रमाधिष्ठानत्वतें चपुनःसर्वबाधावधित्वतें नबसत्यत्वज्ञानत्वादिधर्मवान् हहोवे न असे कहतेहैं नचाप्यसत्यमित्ति एकंमग्रहितीयंइन परद्वयकेंसर्वभेदप्रतिषेधसेंतेहु एवकारककें धर्मध मीभावादिभेदभेदकेप्रतिषेधतें सर्वभेदहेतुकूंकहतेहैं अद्वैतकत्वादिहेतेवृथा असे ज्ञानकहावतहे तैसकाजोभाव सोद्वैतहे सोकहाहेवार्तिककारवेष इवैतैसकूंद्वैत असेक हतेहे तैसकेभावकूं द्वैत असेकहावतहे असेनविद्यमान

होवै द्वैतं क्या रहि द्विधा भाव जहां सो अद्वैत है लहन अहराधहि स
त्नित्य एकोऽद्वितीयः द्वैत इति श्रुतेः पूर्ते योगी ज्ञान के ही लाघव
ताक के अभाव बुद्धि विषे कारता तें द्वैत के अनिर्वचनी
यत्व के अंगीकार के ही प्रत्याहृत्यादि प्रमाण करइसे हु
के वेद्यत्व लें निषेध की उपपत्ति है इत्यर्थः तब ऐसे आत्मा में के
गुलें नें ईश्वर के प्रतिपद्यता होवे इति नहीं ऐसे कहता है
कथं ब्रवीमि एकं नूष्ट तिरस्कार विषे है अद्वैत कत्व के के
वाला के अविषयत्व तें अवचनीय के कहता भया है य
तो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह न विज्ञातं के विज्ञाता
हूं जानता है इत्यादि श्रुति कर के योगः विषयत्व विषे दोतो
के होवता कर के कैसे नहीं आत्मा अप्रमाणाय है इति चेन् अवि
षय हूं आत्मा विषे तदाकार वृत्ति मात्र कर के इति सं अविद्या
के।

५७
57

करनेवर्शकत्वतें ऐसे कहताहै सर्ववेदांतरसेहृदयमैरते यथा
च श्रुतिः यस्यामतंतस्यमतं मतंयस्यनवेदसः अविज्ञा
तं विजानतां विज्ञातमविजानतां यन्मनसा नमनुते येसब
कैमनमानायतहै ऐसेकहतेहैं तेसबकेहीब्रह्मत्वरूपहै
नहींयेजोइनकूं उपासतेहैं इत्यादिश्रुतीआत्माकीअविषय
त्वकूंदिखावतीहैं सोऐसेहीवेदांतवाक्यजन्यअखंडाकार
वृत्तिकेअविद्यानिवर्त्तसितेतत्कल्पितसकलानर्थनिव
र्त्तिसितेपरमानंदरूपहोयाकृतकृत्यहोताहै इत्तेरसेहृदं॥
श्लो० नस्तोमितंव्यासमशेषमर्थसंक्षेपतः नसूत्रैरवेयो
बबंध रविनापितैसंगतयतारखेलार्थतिजौकेरनौमिसुरे
श्वरंच। लघुरप्यबहुहार्यविहर्षितामरत्तोखिवरनिबधो
यं मधुसूदनेन मुनेनावरहितोगुरुतोनारविंदोदय।पद

त्रसोऽएवंरकें चित्तगुरोरेवमेनरहे।यदत्रा ऽसोऽएवंरकेंचित्तनममें वगुरोनरहि॥बकुयाचनाबलमडुकीककेमैनेजिनअल्पतनिबं धकूंकरच्याहे जोअडुएईहांहेजोडुएहैतिनकूंउदारपुरुषस्व हबुद्धीविबेककरें इतिश्रीमत्परमहंसपारिव्राजकाचार्यश्री रवेशववेश्वरसरस्वतीभगवत्पादशिष्यमधुसूदनसरस्व तीविरचितःरसिधांतबिंदुनामग्रंथः रलेखतंकृतंचदास मूलेनसात्तखितोजेन राम १

५८ १ ५१

श्रीगणेशायनमः दो॰ आकांक्षा पुनयोग्यता सं
निधान पहिचान तात्पर्य चौथो मिले तो है शाब्दज्ञान ४९
चौ॰ वाक्यमाहिपद है जेते परस्पर वांछा हैं तेते
तारविन अर्थ न जावे नाहीं येही आकांक्षा है परमाही
५० ज्यों को घटपद सुखों जावे आनयन रहित है
संग मिलावे तो कछु अर्थ जनावे नाहीं तातें नारहे
चहे उर माही ५१ यारवेधि एक पदार्थ जोई दुतीय
पदार्थ चाहे सोई जा रविन अर्थ न आपनो होई ता
पर कूं पर चाहे सोई पर पुरुष मैं हीरो न रहि प्रमा श्रै
ण रविन आकांक्षा की नवरवान अर्थ को बाधपरन
सो जोई कहें योग्यता को रवेर सोई पर नीर सें च
तर पहि प्रमाता अर्थ अबाधियाहि मोमान अग्नि
सिंचन रु कोइन माने अर्थ बाधिया माहि पद्धाने ५४
अखिलेब पद भाबता जोई संन्निधि कहें मनी ज्ञी सोई
घटमान य यह वाक्य प्रमाता सन्निधपद मुख की
नवरवान ५५ प्रथम पहर नर घट यह आरवे दुजी

यप्रहरसुखआनयभावे तोनरहिहोइ है वाक्यप्रमा
ण सन्निधमईसुजानैहान पदतत्प्रतीतकरभाषनजो
ई तात्पर्ययेभाखीयेसोई केचितऐसेकरेंउचार
कहेवेदांतीऔरप्रकार ५७ पदस्वाहरजे आसाजो
ई ताहिविषयतात्वयोग्यपुनहोई येपदअर्थनअ
कांक्षा है यै शाब्दबोधुताहितेंपैये पदस्क्रियाप्र
वर्त्तहोइनरजबहीं कोरकप्रवत्ताचाहपुनतब
हीं तात्पर्यको विषयसोजोई ताकूंबाधनजामेहो
ई पद येहीयोग्यताकरेंबखान जोंकेलखेंहोइ
नरज्ञान पदजन्यपदअर्थज्ञान आदिविधाननर
होवेमान ६० येहीआसतीकरेंउचार तात्पर्य
रिलकारतचार तत्प्रतीतकरभाखतजोई
जोपुनतात्पर्ययहहोई ६१ ब्युकअपंडितभाषत
मांही शाब्दबोधनरहोवेनाहीं येहीसुदृष्टको
मनमेधार कहेंवेदांतीऔरप्रकार ६२ तत्प्रतीत
केजननकीआहेयोग्यताजोइ तात्पर्यपुनवाक्यमें

घर स्या कं रू. पं.

कहैं वे होंत सोइ ६३ चौ० या कर पद को अर्थ
विचारे बहुरों वाक्य अर्थ निर्धारे वर्ण समूह
पद करें बखान पद समूह पुन वाक्य पछान
६४ पद के माह वृत्त चय अहें शक्ति लक्षणा नाम
सो कहें कर संकेत ते करें उच्चार शक्ति अहे पुन
तीन प्रकार ६५ योगएक रूढी पुन दूजी योग रू
ढ भाखी ये तीजी अवयव शक्ति पर भीतर जोई
योगा कहें सु कोविद सोई ६६ समुदाय शक्ति सु
रूढ बखाने उभय स्वरूप तीसरी माने अवयव
शक्ति पंकज पद गाहे पंक जनी कर तां कूं कहें ६७
समुदाय शक्ति कर पंकज नावे सब लोकन के
मन में आवे उभय शक्ति रतेन की है जोई पद भमार
प्रगटी जग सोइ ६८ दोनो में रूढी हैं जोई अति
शय बली पछानो सोई या विधि शक्ति भले निर्धा
र बहुर लक्षणा करे विचार ६९ नतु अंगुर विकार जी
व कूं मान वाक्यार्थ को होवे ज्ञान ता मे दूषण बहु
प्रकार आवे जन जग करे उच्चार ७० दो० मो हृद

थप्रकाशमें भाख्योमैंवस्तार याहपत्नमैंइषता
तामैंलेशनिहार ७१ चौ० तातेंलक्षणायांकेमाहीं
औरप्रकारबलेकोनाहीं जाकयसंबंधलक्षणाजोई
जाइईहांअवश्यकसोई ७२ एकाल्मकरजहत्तीजो
ई गंगाघोषसमाननसोई वाचनमाहिंविरोध
सुजानें बलोअजाहत्तीनाहींतातें ७३ दो० काकनतें
दधिराखतोओलोधावतआह अजहत्तीयास
मनोआहे महावाक्यकेमाहिं ७४ चौ० भागत्याग
लक्षणाजोई स्वयंदेवदत्तवत्सोई तत्त्वंपदमो
जोईसोई शोधनयामोंआवतकोई उपमायारे
हउपाधियेदोई नजेलखेएकचेतनसोई भूमा
दिकपंचीकृतभूत नाहीतेंजोभयोप्रसूत ७६ पूर्व
कर्मनकोफलजोई सुखदुःखहोईईहांपुनसोई
सोमालयतनजानोवीर आदिअोतवतआहेशरीर
७७ कर्मनतेंतनउपजो[illegible] जोई स्थूलोपाधिआम
कीसोई मनोबुद्धिइन्द्रियजोई पंचप्राणसूक्ष्म
तनसोई ७८ सुखदुःखकोसाधनहैजोई सुक्षाको

ख

होवेपुनसोई आत्मकोयेउत्तीयशरीर तात
वरखानेकोरविरधीर ७ अस्मनादिअरवेद्याहैये
जोई कारणहेहवरवानसोई उपाधिमेरहतेआहें
रवियारे आत्मकूंउरअंतरधारे ८०

पृष्ठ ३८-
मनोवच्छिन्न जीवको अथवा मूलाज्ञानावच्छिन्न ब्रह्म को जीव कहते हैं।

51